R. K. Advertising
के माध्यम से 'जैन गजट' में विज्ञापन बुक कराने हेतु सम्पर्क करें-
शेखर चन्द पाटनी
राष्ट्रीय संवाददाता-जैन गजट
मो. 9667168267
रोहित कुमार पाटनी, डायरेक्टर
(आर. के. एडवरटाइजिंग)
मो. 8003892803
ईमेल
rkpatni77@gmail.com

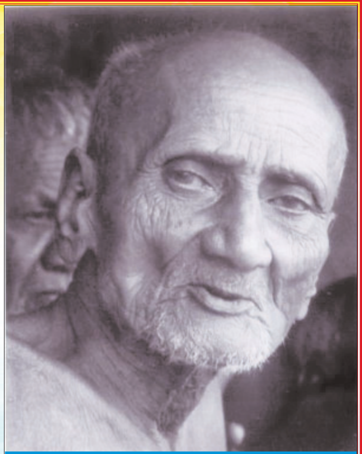
बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य
चारित्र चक्रवर्ती
परम पूज्य आचार्य श्री शांति सागर जी

विहार के दौरान टला बड़ा हादसा पृष्ठ 12 पर

1 दिसम्बर 1895 से प्रकाशित जैन समाज का सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला साप्ताहिक

जैन गज़ट

www.Jaingazette.com

वर्ष 32 अंक 29 कुल पृष्ठ 12 लखनऊ, प्रकाशन तिथि- सोमवार 11 मई 2026, वीर नि. संवत् 2552

Unit : Sri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha jaingazette2@gmail.com

श्रमण संस्कृति के महामहिम पट्टाचार्य आचार्यश्री विशुद्ध सागरजी महाराज ससंघ का चातुर्मास दिल्ली में संभावित

राजेश जैन दद्दू, इंदौर

श्रमण संस्कृति के महामहिम, आध्यात्म योगी एवं चर्चा शिरोमणि पट्टाचार्य आचार्य श्री 108 विशुद्ध सागर जी महाराज ससंघ का 2026 का पावन वर्षायोग इस वर्ष भारत की राजधानी दिल्ली में होने जा रहा है। इस ऐतिहासिक समाचार से सम्पूर्ण भारतवर्ष के जैन समाज में हर्ष व्याप्त है। धर्म समाज प्रचारक राजेश जैन दद्दू ने बताया कि विगत कई वर्षों से दिल्ली नगर की समाज दिल्ली शहर में वर्षायोग के लिए प्रयासरत थे। जैसे ही संकेत प्राप्त हुए कि इस वर्ष का चातुर्मास का परम सौभाग्य दिल्ली नगर की जैन समाज को प्राप्त होने जा रहा है। समाज में उल्लास का वातावरण है।

चातुर्मास का महत्व – जैन श्रमण परंपरा में चातुर्मास का विशेष महत्व है। वर्षाकाल के चार महीनों में आचार्यश्री एक स्थान पर विराजकर धर्म-ध्यान, स्वाध्याय, तप एवं प्रवचनों के माध्यम से समाज को सत्य, अहिंसा, मैत्री एवं ''जियो और जीने दो'' का संदेश देते हैं। आचार्यश्री के सान्निध्य में पर्यूषण महापर्व में हजारों श्रावक-श्राविकाएं शिविर के माध्यम से आत्म-कल्याण का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

दिल्ली समाज में भारी उत्साह – राजधानी दिल्ली में 21वीं सदी के श्रमण संस्कृति के महामहिम पट्टाचार्य आचार्यश्री का चातुर्मास होना दिल्ली जैन समाज के लिए गौरव का विषय है। समाजजनों द्वारा चातुर्मास की भव्य तैयारियां प्रारंभ कर दी गई हैं। विभिन्न समितियों का गठन कर व्यवस्था, आवास, आहार, विहार प्रवचन एवं धार्मिक आयोजनों की रूपरेखा बनाई जा रही है।

आचार्यश्री का परिचय – गणाचार्य आचार्य श्री विरागसागर महाराज के सुयोग्य सुशिष्य, वीतरागी श्रमण संस्कृति के पोशक महान आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज युवाओं के प्रेरणास्त्रोत एवं आगमानुसार आचरण करने वाले श्रमण संस्कृति आध्यात्मिक गुरु के रूप में पद प्रतिष्ठित हैं। उनका प्रमुख संदेश ''नमोस्तु शासन जयवंत हो'' जन-जन तक पहुंच रहा है। 31 मार्च 2007 को औरंगाबाद में महावीर जयंती के पावन अवसर पर उन्हें आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया गया था। अभी

तक लगभग दो लाख किलोमीटर तक का पदविहार कर चुके हैं। वर्तमान समय में आचार्य श्री द्वारा प्रणीत ग्रंथों को सबसे ज्यादा पड़ा जा रहा है।

धर्म प्रभावना – आचार्यश्री द्वारा की जा रही धर्म प्रभावना से समाज में नैतिक मूल्यों, संस्कारों एवं अध्यात्म का व्यापक प्रचार-प्रसार हो रहा है। दिल्ली चातुर्मास के दौरान प्रतिदिन प्रातः जिनेन्द्र अभिषेक, नित्य नियम पूजन शांतिधारा, आचार्यश्री के मंगल प्रवचन एवं तत्वचर्चा के कार्यक्रम आयोजित होंगे।

अनुमोदना - दिल्ली की सकल दिगंबर जैन समाज ने आचार्यश्री के चातुर्मास के संकेत को सहर्ष स्वीकार करते हुए पुण्यार्जन का लाभ लेने का संकल्प लिया है। इस वर्ष के वर्षायोग में देशभर से श्रद्धालुओं के दिल्ली पहुँचने की संभावना है।

।।श्री महावीराय नमः।।
WONDERFUL 12 Nights / 13 Days
EUROPE
शुद्ध जैन भोजन किचन कारावैन के साथ
7 यूरोपियन देशों की सैर
18 May, 2 June, 16 June
यूरोप जैन मंदिर के दर्शन
FRANCE, PARIS, ITALY
GERMANY, SWITZERLAND
AUSTRIA, AMSTERDAM
ला: नेमचंद जुगल किशोर जैन तीर्थ यात्रा संघ
VAYUDOOT WORLD TRAVELS PVT. LTD.
Mob : +91 9313338256, 9810408256, 9818312056

अति प्राचीन मनोरथ पूर्ण 1008 श्री मुनिसुव्रतनाथ अतिशय क्षेत्र, प्रभुसर हस्तेड़ा जयपुर

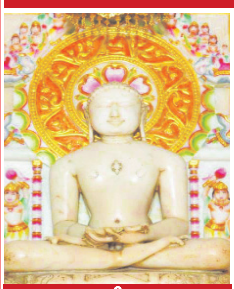
869 साल प्राचीन मूलनायक श्री मुनिसुव्रतनाथ प्रतिमा

शांतिधारा का प्रसारण
LIVE
आरती : 7:15 - 7:45 AM
शांतिधारा : 8:30 AM
@jainmandirhasteda
नामांकित शांतिधारा पुण्यार्जन के लिए संपर्क करें:
अमित शर्मा (Manager)-9783016885
हस्तेड़ा जैन मंदिर दूरी-दिल्ली से 250 किमी.एवं जयपुर से 65 किमी.
संपर्क सूत्र:
नितिन कुमार पाटनी (मंत्री) 9001255955
मनीष जी गंगवाल (कोषाध्यक्ष) 095880-20330
नामांकित शांतिधारा के लिए किसी भी राशि का आग्रह नहीं है।

JK MASALE SINCE 1957
Buy online on jkcart.com

– Breakfast Matlab –
JK POHA
Shudh Khao Swasth Raho...

ज्ञान भारतम् मिशन के तहत जनपद में 'राष्ट्रीय पाण्डुलिपि सर्वेक्षण' अभियान का शुभारम्भ

साढ़ूमल में स्थित 109 वर्ष पुरानी संस्था से हुई शुरुआत, दुर्लभ हस्तलिखित पांडुलिपियों का किया गया डिजिटल सर्वेक्षण

डॉ. सुनील जैन 'संचय'

ललितपुर। भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा संचालित ज्ञान भारतम् मिशन के अंतर्गत देशव्यापी 'राष्ट्रीय पाण्डुलिपि सर्वेक्षण' अभियान का शुभारम्भ ललितपुर जनपद में हो गया है। इस महत्वपूर्ण योजना की शुरुआत जनपद की 109 वर्ष पुरानी प्रतिष्ठित संस्था श्री महावीर दिगम्बर जैन संस्कृत उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं गणेश वर्णी छात्रावास, साढ़ूमल से की गई, जहाँ सुरक्षित दुर्लभ हस्तलिखित पांडुलिपियों का सर्वेक्षण एवं डिजिटलीकरण प्रक्रिया प्रारम्भ की गई।

योजना से जुड़े पुरातत्व एवं इतिहास प्रेमी फिरोज इकबाल ने विद्यालय पहुँच कर पुस्तकालय में संरक्षित पांडुलिपियों का निरीक्षण किया तथा उनकी जानकारी ज्ञान भारतम् ऐप पर अपलोड की। उन्होंने बताया कि विद्यालय में सैकड़ों वर्ष पुरानी अनेक दुर्लभ पांडुलिपियाँ सुरक्षित हैं, जो भारतीय ज्ञान परंपरा की अमूल्य धरोहर हैं। अगले चरण में हीरा निधि साढ़ूमल में संरक्षित पांडुलिपियों का सर्वेक्षण किया जाएगा।

साढ़ूमल स्थित श्री महावीर दिगम्बर जैन संस्कृत उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में हस्तलिखित पांडुलिपियों का सर्वेक्षण करती टीम व अभिनंदोदय तीर्थक्षेत्र ललितपुर में पांडुलिपि सर्वेक्षण टीम

जनपद भर में होगा व्यापक सर्वेक्षण अभियान – शासन के निर्देशानुसार इस योजना के अंतर्गत जनपद के निजी एवं सरकारी पुस्तकालयों, संग्रहालयों, शिक्षण संस्थानों, शोध संस्थानों, संस्कृत पाठशालाओं, मंदिरों, मठों, आश्रमों, गुरुकुलों तथा ट्रस्टों में उपलब्ध पांडुलिपियों का सर्वेक्षण किया जाएगा। इसके अतिरिक्त निजी संग्रहकर्ताओं, पुरोहितों, धर्माचार्यों, ज्योतिषाचार्यों, आयुर्वेदाचार्यों तथा संस्कृत एवं प्राचीन भाषाओं के विद्वानों के पास सुरक्षित निजी संग्रह भी चिन्हित किए जाएंगे। विशेष बात यह है कि पांडुलिपियों का स्वामित्व संबंधित संग्रहकर्ताओं के पास ही सुरक्षित रहेगा तथा केवल उनका डिजिटल अभिलेखीकरण किया जाएगा।

भारत की ज्ञान विरासत को विश्व पटल पर लाने का संकल्प – विद्यालय ट्रस्टी एवं जैन दर्शन-प्राकृत भाषा मनीषी डॉ. सुनील संचय ने बताया कि ज्ञान भारतम् मिशन भारत की समृद्ध पांडुलिपि परंपरा को संरक्षित करने की अत्यंत महत्वाकांक्षी राष्ट्रीय पहल है। इसका उद्देश्य देशभर में बिखरी पांडुलिपियों की पहचान करना, उनका सूचीकरण करना, वैज्ञानिक संरक्षण देना तथा उन्हें एक केंद्रीय डिजिटल मंच पर उपलब्ध कराना है, उन्होंने कहा कि यह मिशन भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा को आधुनिक तकनीक से जोड़ते हुए भावी पीढ़ियों तक पहुँचाने का माध्यम बनेगा। साथ ही शिक्षा, शोध और सांस्कृतिक पुनर्जागरण को नई दिशा देगा। यह पहल 'विकसित भारत 2047' के संकल्प के अनुरूप है।

विद्यालय परिवार ने किया सहयोग – इस अवसर पर विद्यालय ट्रस्टी देवेंद्र जैन झंडा वाले, गृहपति पंडित संतोष शास्त्री, प्रधानाचार्य अभिषेक शास्त्री सहित अन्य पदाधिकारियों ने विद्यालय में सुरक्षित पांडुलिपियों की जानकारी उपलब्ध कराई तथा सर्वेक्षण कार्य में सहयोग प्रदान किया।

हीरा निधि साढ़ूमल के प्रमुख देवेंद्र जैन झंडा ने हीरा निधि में उपलब्ध महत्वपूर्ण पांडुलिपियों का अवलोकन कराया और जल्द ही अपलोड कराने की बात कही।

उल्लेखनीय है कि हाल ही में पुरातत्व विभाग झांसी एवं ललितपुर की संयुक्त टीम ने नगर स्थित अभिनंदोदय तीर्थक्षेत्र पहुँच कर नगर में उपलब्ध पांडुलिपियों की भी जानकारी ली थी इस दौरान संजीव जैन सीए, डॉ. सुनील संचय, संजय मोदी, सनत मलैया ने टीम को जानकारी प्रदान की।

बासोकुंड स्थित 'प्राकृत जैन शास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान' को बंद करने की अधिसूचना का विरोध, प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री को ज्ञापन भेजा

ओम पाटोदी

इंदौर/बदनावर। भगवान महावीर स्वामी की पावन जन्म स्थली बासोकुंड, वैशाली स्थित ऐतिहासिक 'प्राकृत जैन शास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान' को बंद करने की सरकारी अधिसूचना पर देश भर में तीखा विरोध शुरू हो गया है।

स्थानीय वर्द्धमानपुर शोध संस्थान एवं सकल जैन समाज ने माननीय प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री बिहार एवं राज्यपाल महोदय को ज्ञापन भेजकर अधिसूचना तत्काल रद्द करने की मांग की है।

क्या है मामला – इस संस्थान का शुभारंभ स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने महावीर जन्म कल्याणक उत्सव, चैत्र शुक्ल त्रयोदशी वीर निर्वाण संवत 2482, तदनुसार 23 अप्रैल 1956 को किया था। लगभग 70 वर्षों से यह संस्थान प्राकृत भाषा, जैन आगम और अहिंसा दर्शन पर शोध का विश्व का एक मात्र केंद्र रहा है। वर्तमान में एक सरकारी प्रस्ताव के तहत इसे बंद करने की अधिसूचना जारी की गई है, जिसका जैन समाज और भाषा प्रेमियों ने सख्त विरोध जताया है।

वर्द्धमानपुर शोध संस्थान के ओम पाटोदी ने बताया कि 70 वर्ष पूर्व भारत सरकार ने संस्कृत, प्राकृत और पाली की त्रिवेणी को संरक्षित करने के लिए तीन अलग शोध केंद्र स्थापित किए थे। इन केंद्रों ने हजारों विद्वान देश को दिए। प्राकृत भाषा का प्रतिनिधित्व करने वाले इस इकलौते संस्थान को षड्यंत्र पूर्वक बंद करना भारतीय ज्ञान परंपरा को नष्ट करने का उपक्रम है। इसे कोई भी भारतीय विद्वान बर्दाश्त नहीं कर सकता।

मुनि श्री सुधासागर जी महाराज के आशीर्वाद से आंदोलन गतिमान है, राष्ट्रीय जिनशासन एकता संघ के आह्वान पर देशभर के प्राकृत प्रेमियों एवं जैन समाज ने केंद्र व बिहार सरकार को ज्ञापन सौंपकर अधिसूचना रद्द करने की मांग की है।

ज्ञापन में मांग:

वर्द्धमानपुर शोध संस्थान एवं दिगम्बर जैन समाज, बदनावर सहित अन्य सामाजिक संगठनों ने मांग की है कि -

1. संस्थान बंद करने की अधिसूचना तत्काल रद्द की जाए।
2. प्राकृत भाषा के विकास हेतु संस्थान को पुनः शुरू कर सुदृढ़ बनाया जाए।
3. पिछले 20 वर्षों से रिक्त पदों पर नियुक्ति कर संस्थान का पुनरुत्थान किया जाए।

ज्ञापन भेजने वालों में संस्थान के भोपाल इंदौर बदनावर के कार्यकर्ता और समाजजनों में राजेश जैन फुलजी बा, राजमल सूर्या, मुकेश विनायका, सुरेन्द्र मूणत, राजेश मोदी, विजय बाफना, महेन्द्र सुदेचा, राजेन्द्र सराफ अनिल लुनिया, सर्वेश मंडलेचा, सौरभ जैन बिट्टू, हेमंत मोदी, अभिषेक टल्ला, सुशील जैन, पवन पाटोदी, सुशील मोदी, ललित गोधा, विपिन पाटनी, स्वप्निल जैन, ओम पाटोदी सहित नगर के गणमान्य नागरिक शामिल थे।

पृष्ठभूमिः यह संस्थान 19 हजार दुर्लभ पुस्तकों व पांडुलिपियों से सुसज्जित है। यहाँ जापान, श्रीलंका, कंबोडिया तक के शोधार्थी अध्ययन करते रहे हैं। जैन समाज का आरोप है कि दरभंगा के संस्कृत संस्थान और नालंदा के पाली संस्थान को चलाया जा रहा है, पर प्राकृत संस्थान के साथ सौतेला व्यवहार हो रहा है।

इंदौर नवग्रह जिनालय में बड़ी चोरी

चांदी-अष्टधातु की मूर्तियां और पूजा सामग्री ले उड़े चोर

इंदौर। एरोड्रम थाना क्षेत्र ग्रेटर बाबा परिसर स्थित नवग्रह जिनालय में चोरी की गंभीर घटना सामने आई है। अज्ञात चोरों ने मंदिर में धावा बोलते हुए कीमती धार्मिक सामग्री पर हाथ साफ कर दिया। प्राप्त जानकारी के अनुसार चोर मंदिर से लगभग 5 चांदी की प्रतिमाएं, 4 अष्ट धातु की प्रतिमाएं, करीब 25 कलश, एक छत्र, पांडुक शिला से संबंधित सामग्री एवं अन्य पूजा के बर्तन चोरी कर ले गए। घटना के बाद क्षेत्र में चिंता और आक्रोश का माहौल है। मंदिर समिति द्वारा तुरंत पुलिस प्रशासन को सूचना दे दी गई है,

मौके पर पहुंची पुलिस ने जांच शुरू कर दी है और आसपास के सीसीटीवी फुटेज खंगाले जा रहे हैं। मंदिर समिति ने सभी समाजजनों से अपील की है कि यदि किसी को इस घटना से संबंधित कोई भी जानकारी प्राप्त हो, तो तत्काल पुलिस या मंदिर समिति को सूचित करें। साथ ही, भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए मंदिर परिसर की सुरक्षा व्यवस्था को और मजबूत करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया गया है। समाजजनों से अपील कि धैर्य बनाए रखें, सतर्क रहें और प्रशासन के साथ सहयोग करें।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित
SANTOSH JAIN & ASSOCIATES
SWATI VINIMAY & CONSULTANCY PVT. LTD
ANAMICA TRADERS PVT. LTD.
L. N. FINANCE PVT. LTD.
OFFICE
CITY TRADE CENTRE,
Near Athgaon Flyover, A.T. Road, Guwahati-781001
M. : 94350-48488 (O) / 97060-48488 (R) / 8638773711

सी. ए. (डॉ.) संतोष काला | श्रीमती सरिता काला | संदीप-स्वाति पाटनी | श्रेयांस-स्नेहा काला
RESIDENCE : 401/501, Abhinandan Appartment, 4th Floor, H.S.Road, Chhatribari, Guwahati-781008
E-mail : casantoshkala@gmail.com
SHREE COMPLEX & SHREEMAN COMPLEX, P. O. BIJOYNAGAR-781122, DIST-KAMRUP (ASSAM)

बड़के बालाजी जयपुर में आचार्यश्री वर्धमान सागर जी का 36 साधुओं सहित 10 वर्षों के बाद हुआ भव्य मंगल प्रवेश

देव शास्त्र और गुरु हमारे आराध्य हैं इनकी भक्ति से कर्म नष्ट होते हैं : आचार्यश्री वर्धमान सागर जी

राजेश पंचोलिया, इंदौर

प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की अक्षुण्ण मूल बालब्रह्मचारी पट्ट परंपरा के पंचम पट्टाधीश 108 आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज का दिनांक 5 मई को 6.5 किलोमीटर विहार कर श्री दिगंबर चन्द्रप्रभ मंदिर चन्द्र पूरी बड़ के बालाजी ग्राम ठिकरिया में हाथी धोड़े, सैकड़ों ध्वज पताका भक्ति नृत्य के साथ भव्य मंगल प्रवेश हुआ। श्री भागचंद श्रीमती सुनीता चूड़ीवाल परिवार द्वारा आचार्य श्री के चरण प्रक्षालन कर मंगल आरती की। आचार्य श्री के साथ 10 मुनिराज, 20 आर्यिका, 1 ऐलक, 4 क्षुल्लक 1 क्षुल्लका कुल 37 पीछी का प्रवेश हुआ। श्रीमती सुनीता भागचंद चुड़ीवाल के अनुसार इसके पूर्व 28 फरवरी 2016 को आचार्य श्री संघ का जयपुर महानगर के बड़ के बालाजी में प्रवेश हुआ था। आचार्य संघ श्री जी के दर्शन, पंचामृत अभिषेक के बाद मंचासीन हुए। श्री चंद्रप्रभ भगवान के चित्र अनावरण कर दीप प्रज्वलन ब्रह्मचारी गज्जू भैय्या एवं अतिथियों, श्रीमती सुनीता, श्री भागचंद चूड़ीवाल परिवार ने किया। नृत्य मंगलाचरण के बाद मुनि श्री हितेंद्र सागर जी का प्रवचन हुआ। आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने समाधिस्थ आर्यिका श्री सुपार्श्वमति जी के जन्म स्थली सनावद में वर्ष 1964 चातुर्मास का उल्लेख कर यादें साझा कीं। देव, शास्त्र और गुरु परम आराध्य हैं, इनकी भक्ति से कर्म नष्ट प्रक्षालन होता हैं देव, शास्त्र, गुरु जैनधर्म के प्राण हैं और उनका जीवन, संसार के प्राणी के लिए मार्गदर्शक होता है चाहे देव हो, चाहे शास्त्र हो या गुरु हो, उनके द्वारा प्राप्त मार्गदर्शन जो होता है, उस मार्गदर्शन से संसार का प्राणी अपने जीवन को संवारता है। जब आप घर से निकलते हैं, दर्पण आपके सामने होता है, दर्पण के सामने आप खड़े होते हैं और उस दर्पण में अपने शरीर कमी को देख कर ठीक करते हो, आत्मा को कोई नहीं देखता कि आत्मा कर्मों से मलिन है शरीर को देखते हैं कि अब हम घर से बाहर जा रहे हैं हमारा शरीर ठीक है या नहीं है। राजेश पंचोलिया के अनुसार आचार्य श्री ने आगे बताया कि ममता कहें या मोह कहें इस मोह से ऊपर उठने के लिए भगवान जी के चरणों में जाया जाता है।

अभिषेक पूजन भक्ति की जाती है धार्मिक कार्यों से आत्मा पुण्य कमाती अर्जित करती है। उस पुण्य के फल से श्रेष्ठ मानव कुल प्राप्त होता है। श्रेष्ठ कुल में मार्गदर्शक गुरुजन जो है वो मार्ग जैसा बताते हैं। वैसे कर्म करने से पाप कर्म पुण्य कर्म किए जाते हैं। जब पाप कर्मों का उदय आता है, जब जीवन में बाधा कष्ट आते हैं। आचार्यश्री ने कहा कि हमें याद आती गणिनी आर्यिका श्री सुपार्श्वमति जी उन्होंने दीक्षा का संकल्प लिया था उसे पूरा किया। वचन का पालन करना साधु का परम कर्तव्य होता है। जिनके जीवन में धर्म का आलंबन होता है, वे ठीक ठीक प्रकार से विचार कर दृढ़ संकल्प को पूर्ण करते हैं। अपनी गृहस्थ अवस्था और आर्यिका श्री सुपार्श्वमति जी के चातुर्मास का जिक्र किया हम बहुत छोटे थे, उस वर्षायोग में माताजी के पास बैठ करके अध्ययन करने का एक अवसर मिला था। माता जी ने हमें सन 1965 में देखा था लेकिन उनके मन में एक भाव था क्या देखा था क्या उनका ज्योतिष ज्ञान था कुछ पता नहीं लेकिन उन्होंने कहा कि इस व्यक्ति में कुछ दम योग्यता गुण तो है। चतुर्थ पट्टाधीश श्री अजित सागर जी महाराज ने आचार्य पद का निर्णय किया उस निर्णय को मुहर लगाने का काम माताजी ने किया था। माता जी ने यही कहा था कि मैंने 1965 में उनको उनके घर में देखा था। मेरा ज्ञान कहता है कि यह आचार्य जरूर बनेंगे। आचार्य श्री धर्म सागर जी महाराज, आचार्य श्री अजीत सागर जी महाराज का मस्तक पर हाथ रखा हुआ आशीर्वाद साथ रहा।

परम पूज्य, वात्सल्य वारिधि, पट्टाचार्य 108 श्री वर्धमान सागर जी महाराज ससंघ के चरणों में शत् शत् नमन

आचार्य वर्धमान सागर वचन – भाग 1

जिनके चरणों में लगी हुई तीर्थो की पावन रजकण,
बड़े भाग्य से मिल पाता उन चरणों का स्पर्शन
जिनकी हितमित प्रिय वाणी हरती है धरती का क्रंदन
ऐसे आचार्य श्री वर्धमान सागरजी के चरणों में हमारा शत् शत् वंदन

तीव्र कषाय अपराध करती है तो मंद कषाय क्षमा मांगती है, हम नहीं।

-: नमनकर्ता/पुण्यार्जक :-

श्रीपाल सबलावत, सुरेश सबलावत, हुलासचंद सबलावत परिवार रेडिप्रिण्ट जयपुर

सुधान्शु कासलीवाल अध्यक्ष श्री महावीर जी
विवेक काला, (कालाजी ज्वैलर्स) जयपुर
श्रीपाल भागचन्द चूड़ीवाल, श्यामनगर जयपुर
राजेन्द्र कटारिया, अहमदाबाद

धर्मचंद पहाड़िया जयपुर राज. केन्द्रीय कार्याध्यक्ष तीर्थ संरक्षिणी
इन्द्रमणी देवी चूड़ीवाल, निखार, जयपुर
कैलाशचंद पाटनी किशनगढ़ (उरसेवा वाले)
Caption Tours And Travels Co. Kuwait (Mr. Rishabh Pachori, Mr.Mayur Pachori, Parsola)

विज्ञापन प्रेषक: R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatin777@gmail.com

अहिंसा वॉक की पहल से रामनाथपुरम में 1000 वर्ष प्राचीन भगवान महावीर प्रतिमा का अनावरण

राजेन्द्र जैन महावीर, सनावद

तमिलनाडु के रामनाथपुरम जिले के मुदुकुलत्तूर क्षेत्र के समीप स्थित मेलत्थूवल ग्राम में लगभग 1000 वर्ष प्राचीन भगवान महावीर की एक दुर्लभ एवं प्राचीन प्रतिमा का अनावरण हुआ है। यह खोज दक्षिण भारत में जैन धर्म के व्यापक प्रसार और समृद्ध विरासत का महत्वपूर्ण प्रमाण मानी जा रही है।

काले पत्थर से निर्मित यह प्रतिमा लगभग 3 फीट ऊँची एवं 2 फीट चौड़ी है। इसमें भगवान महावीर कमलासन पर मकर अलंकरण युक्त सिंहासन पर अर्ध-पर्यंक मुद्रा में विराजमान हैं। उनके ऊपर अशोक वृक्ष दर्शाया गया है, जो आध्यात्मिक शांति एवं ज्ञान का प्रतीक है। प्रतिमा के शीर्ष पर त्रि-छत्र निर्मित हैं तथा पीछे प्रभामंडल अंकित है। दोनों ओर चंवरधारी सेवकों की सुंदर आकृतियाँ भी उकेरी गई हैं। शैली के आधार पर इसे 11वीं शताब्दी का माना जा रहा है। इस प्रतिमा के अस्तित्व की प्रारंभिक जानकारी स्थानीय पुलिसकर्मी वेलमुरुगन द्वारा सामने आई, जिसके बाद चेन्नई के "अहिंसा वॉक" समूह से जुड़े जैन समुदाय के सदस्यों ने स्थानीय निवासी करुप्पन्नन एवं ग्रामवासियों के सहयोग से प्रतिमा की सुरक्षा हेतु एक साधारण संरचना का निर्माण कराया, जिससे इस ऐतिहासिक धरोहर का संरक्षण सुनिश्चित हो सका। रामनाथपुरम पुरातत्व अनुसंधान संस्थान के अध्यक्ष श्री वी. राजगुरु ने स्थल का निरीक्षण करते हुए बताया कि यह क्षेत्र प्राचीन काल में जैन धर्म एवं व्यापारिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र रहा है। मदुरै और केरल को जोड़ने वाले प्राचीन व्यापार मार्गों तथा पूर्वी तट के गाँवों में पूर्व में भी जैन तीर्थंकर प्रतिमाएँ एवं अवशेष प्राप्त हुए हैं, जो इस क्षेत्र के समृद्ध ऐतिहासिक महत्व को दर्शाते हैं। विशेषज्ञों के अनुसार जैन मंदिर एवं उपासना स्थल प्रायः उन स्थानों पर स्थापित किए जाते थे, जहाँ जैन व्यापारी व्यापार मार्गों के समीप निवास करते थे, जिससे मेलत्थूवल का यह स्थल भी एक प्राचीन जैन केंद्र होने की संभावना को बल मिलता है। ग्राम क्षेत्र में लगभग 20 एकड़ भूमि पर लौह युग से संबंधित काले एवं लाल मिट्टी के बर्तनों के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं, जिन्हें लगभग 2000 वर्ष पुराना माना जा रहा है। यह इस क्षेत्र में प्राचीन मानव बसावट का सशक्त प्रमाण प्रस्तुत करता है। हाल ही में आयोजित कुम्भाभिषेक (शिखर प्रतिष्ठा एवं कलशारोहण) के दौरान आंशिक रूप से मिट्टी में दबे इस महावीर प्रतिमा की विधिवत पूजा-अर्चना की गई। इस अवसर पर "अहिंसा वॉक" के अध्यक्ष प्रोफेसर कनक अजित दास, अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य श्री पोन राजेन्द्र प्रसाद सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे।

यह खोज न केवल पुरातात्विक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि जैन संस्कृति, अहिंसा के सिद्धांत और भारतीय आध्यात्मिक परंपरा की समृद्ध विरासत को भी उजागर करती है। अहिंसा वाक को भारतवर्ष के प्रमुख समाजसेवी व तमिलनाडु के जैन तीर्थों के जीर्णोधार कर्ता श्री एम. के. जैन चेन्नई का सहयोग निरंतर प्राप्त होता है।

इस संबंध में जानकारी अरिहंत गिरि के श्री बसंत शास्त्री द्वारा दी गई।

बाह्य आकर्षण छोड़ो, आत्मा में ठहरो, यही सच्ची शांति का मार्ग है

- आचार्यश्री समय सागरजी

सुमत लल्ला जैन

नागपुर। श्री दिगंबर जैन परवार मंदिर, परवारपुरा, इतवारी में परम पूज्य आचार्य श्री समयसागर महाराज एवं ससंघ के सानिध्य में प्रतिदिन सुबह 7:00 बजे अभिषेक, शांति धारा, आचार्य श्री की अष्ट द्रव्य से पूजा तथा 8:15 बजे आचार्य श्री के प्रवचन होते हैं। प्रवचन में आचार्यश्री समय सागर महाराज ने कहा कि ÷बाह्य परिग्रह और आकर्षण मनुष्य को भ्रमित करते हैं, जबकि जो आत्मा में स्थित होता है वही सच्ची शांति और स्थिरता को प्राप्त करता है। जीवन का सार बाह्य से अंतरंग की यात्रा में ही निहित है। प्रचार-प्रसार समिति संयोजक सुमत लल्ला जैन, डॉक्टर अनीश जैन ने बताया आदिश्वर धाम बाजारगांव पंचकल्याणक जो कि बड़े ही भक्तिभाव से परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महाराज के मंगल आशीर्वाद से एवं नवाचार्य 108 समय सागर जी महाराजजी एवं क्षेत्र उद्धारक पूज्य मुनिश्री 108 विराटसागरजी एवं पूज्य मुनिश्री 108 निस्संगसागरजी महाराज एवं आचार्य संघ के मंगल सानिध्य में, श्रद्धेय बाल ब्रह्मचारी विनय भैयाजी एवं चिद्रुप भैयाजी के कुशल निर्देशन में पुण्यस्थली तुलसी नगर में बड़े ही भक्तिभाव पूर्वक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर आप सभी ने यथायोग्य सहयोग दिया, जिसके लिए श्री दिगंबर जैन परवार मंदिर ट्रस्ट आप सभी का आभार व्यक्त करता है। इसलिए सभी संस्थाएं और जिन्होंने व्यक्तिगत रूप से इस महा महोत्सव में सहयोग प्रदान किया है, उन सबको आचार्य श्री के समक्ष श्रीफल भेंटकर आशीर्वाद प्राप्त करने का अवसर मिला।

"हर मास 1 उपवास" महाअभियान का भव्य एवं सफल आयोजन

साधना महोदधी उभय मासोपवासी तपाचार्य अंतर्मना गुरुदेव आचार्य श्री 108 प्रसन्न सागर जी महाराज ससंघ के पावन सानिध्य एवं योग पुरुष बाबा रामदेव के प्रेरक मार्गदर्शन में आज दिनांक 7 मई, गुरुवार को परतापुर (राजस्थान) की पावन धरा पर "हर मास 1 उपवास" महाअभियान का भव्य एवं सफल आयोजन संपन्न हुआ।

इस ऐतिहासिक अवसर पर हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं, समाजजनों एवं साधर्मियों ने सहभागिता कर उपवास का संकल्प लेते हुए संयम, स्वास्थ्य और साधना के इस महाअभियान को जन-जन तक पहुँचाने का संदेश दिया। कार्यक्रम की विशेष गरिमा तब और बढ़ गई जब "उपवास दीपक" एवं "तपोभिनंदन पत्र" का विधिवत विमोचन किया गया। यह आयोजन केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि, तप, संयम और स्वस्थ जीवनशैली की ओर बढ़ता हुआ एक प्रेरणादायी जनांदोलन सिद्ध हुआ।

प्रमोद जैन गटटू बने कांग्रेस जिला सचिव

बड़ामलहरा। कांग्रेस संगठन को मजबूत करने की दिशा में जिला कांग्रेस अध्यक्ष गगन यादव द्वारा नई जिला कार्यकारिणी की घोषणा कर दी गई है। जारी सूची में बड़ामलहरा के प्रमोद जैन गटटू को जिला सचिव की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई है।

जैसे ही प्रमोद जैन को जिला सचिव बनाए जाने की खबर क्षेत्र में पहुंची, उनके समर्थकों और कांग्रेस कार्यकर्ताओं में खुशी की लहर दौड़ गई। समर्थकों ने एक-दूसरे को शुभकामनाएं दीं तथा सोशल मीडिया के माध्यम से भी बधाइयों का सिलसिला शुरू हो गया। कांग्रेस कार्यकर्ताओं का कहना है कि प्रमोद जैन लंबे समय से पार्टी संगठन में सक्रिय रहकर जमीनी स्तर पर कार्य कर रहे हैं। वे लगातार चुनाव कार्यालय प्रभारी बनकर कर पार्टी नेतृत्व ने उनकी सक्रियता और संगठन के प्रति समर्पण को देखते हुए उन्हें यह जिम्मेदारी सौंपी है। जिला सचिव बनाए जाने पर कांग्रेस नेतृत्व का एव वरिष्ठजनों एवं जिला अध्यक्ष गगन यादव विधायका आदरणीय दीदी रामसिया भारती ब्लॉक अध्यक्ष राज कुमार सिंह का आभार व्यक्त किया, वहीं कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने उम्मीद जताई है कि नई कार्यकारिणी के गठन से जिले में संगठन को नई मजबूती मिलेगी।

जैन तीर्थ सोनागिर में चोरी का आरोपित बोला - 'फिर करूंगा चोरी'

अनिल जैन बड़कुल, ए बी जैन न्यूज

प्रसिद्ध जैन तीर्थ सोनागिर में चोरी करने वाले गिरोह को पकड़कर पुलिस ने करीब 25 लाख कीमत की चांदी की मूर्ति, सिंहासन और अन्य धार्मिक सामग्री बरामद कर ली है। चौकाने वाली बात यह है कि चोरी के तीन आरोपितों में से एक सीहोर निवासी मुख्य आरोपित विशाल विश्वकर्मा ने पूछताछ के दौरान कहा कि जमानत मिलते ही फिर चोरी करूंगा यही मेरा प्रोफेशन है। आरोपित ने दावा किया कि अब तक वह लगभग 1 हजार चोरी की वारदातें कर चुका है।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...

डायनामिक इंजीनियर्स प्रा. लि.

28, बैरकपुर ट्रन्क रोड
कोलकाता- 700002 'प.बं.'
फोन : 25577534

बड़ों की बात गंभीरता से न लेने वाले आगे नहीं बढ़ पाते हैं

जीवन में सफल होना अर्थात रत्नत्रय का फल पाना

मन की नहीं चलेगी अतः जो चलता है उसमें मन लगाओ

नवागढ़ गुरुकुल में गणाचार्य श्री विराग सागर जी का जन्म दिवस मनाया

रत्नेश जैन रागी/राजेश रागी, बकस्वाहा

बकस्वाहा। निकटवर्ती जैन तीर्थ नवागढ़ के श्री नवागढ़ गुरुकुल में परम पूज्य आचार्य श्री विराग सागर जी का जन्म दिवस बड़े ही उत्साह एवं श्रद्धा के साथ मनाया गया। इस पावन अवसर पर गुरुकुलम की प्राचार्या ब्रह्मचारिणी संध्या दीदी, अधीक्षक अनुराग जैन, शिक्षक संजय पाठक, शिक्षक विनीत पाठक सहित समस्त विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण के साथ हुआ, जिसके पश्चात पूज्य आचार्य श्री के चित्र का अनावरण एवं दीप प्रज्वलन कर उन्हें श्रद्धापूर्वक नमन किया गया। इसके उपरांत विद्यार्थियों ने काव्य पाठ एवं भाषण के माध्यम से अपने भाव व्यक्त करते हुए आचार्य श्री के जीवन, त्याग, तपस्या एवं

आदर्शों को प्रस्तुत किया। इस अवसर पर गुरुकुल के शिक्षकों ने भी अपने प्रेरणादायी विचार व्यक्त किए - प्राचार्या ब्र. संध्या दीदी ने अपने विस्तृत उद्बोधन में कहा कि आचार्य श्री विराग सागर जी का जीवन केवल एक साधु जीवन नहीं, बल्कि मानवता के लिए एक जीवंत प्रेरणा है। उन्होंने बताया कि आचार्य श्री ने अपने तप, त्याग और संयम से यह सिद्ध किया है कि आत्म शुद्धि एवं आत्मविकास ही जीवन का वास्तविक उद्देश्य है। उन्होंने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि यदि हम अपने जीवन में अनुशासन, समय का सदुपयोग और सकारात्मक सोच को अपनाएं तो हम भी अपने जीवन को सफल एवं सार्थक बना सकते हैं। संध्या दीदी ने यह भी कहा कि आचार्य श्री के उपदेशों का अनुसरण करके ही समाज में सच्चे संस्कारों का निर्माण संभव है। अधीक्षक अनुराग जैन ने अपने विचार रखते हुए कहा कि आचार्य श्री का जीवन संघर्ष, धैर्य और आत्मनियंत्रण का अद्भुत उदाहरण है। उन्होंने कहा कि आज के समय में जब युवा पीढ़ी अनेक विचलनों से घिरी हुई है, तब आचार्य श्री के विचार उन्हें सही दिशा प्रदान करते हैं। अनुराग जैन ने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि हमें अपने दैनिक जीवन में छोटे-छोटे सदुणों-जैसे सत्य बोलना, बड़ों का सम्मान करना और अपने कर्तव्यों का निष्ठा से पालन करना-को अपनाना चाहिए। उन्होंने यह भी जोड़ा कि आचार्य श्री का जीवन हमें यह सिखाता है कि कठिनाइयाँ चाहे कितनी भी हों, यदि हमारे लक्ष्य स्पष्ट और संकल्प मजबूत हों, तो सफलता निश्चित है। शिक्षक संजय पाठक ने अपने विचार रखते हुए कहा कि आचार्य श्री का व्यक्तित्व अत्यंत प्रभावशाली एवं प्रेरणादायी है। उनका संपूर्ण जीवन समाज के उत्थान एवं धर्म की सेवा में समर्पित रहा है, जिससे हमें निरंतर प्रेरणा मिलती है। शिक्षक विनीत पाठक ने कहा कि आचार्य श्री के उपदेश हमें सदाचार, अनुशासन एवं नैतिक मूल्यों का पालन करने की प्रेरणा देते हैं। उन्होंने विद्यार्थियों से आग्रह किया कि वे इन मूल्यों को अपने जीवन में आत्मसात करें।

अंत में शिक्षक संजय पाठक ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस पावन अवसर को सफल बनाने में गुरुकुल परिवार के प्रत्येक सदस्य का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने प्राचार्या, अधीक्षक, समस्त शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के सहयोग की सराहना करते हुए सभी का हृदय से धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने विशेष रूप से विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता और उनके द्वारा प्रस्तुत किए गए उत्कृष्ट कार्यक्रमों की प्रशंसा की। साथ ही उन्होंने कहा कि ऐसे कार्यक्रम न केवल हमारे आध्यात्मिक विकास में सहायक होते हैं, बल्कि हमें अपने महान गुरुओं के आदर्शों को समझने और उन्हें जीवन में उतारने की प्रेरणा भी प्रदान करते हैं।

आचार्य विद्यानन्द पुरस्कार से सम्मानित हुए प्रो. अनेकांत जैन

नई दिल्ली, 26 अप्रैल 2026। जैन दर्शन एवं प्राकृत भाषा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाले प्रख्यात विद्वान प्रो. (डॉ.) अनेकांत कुमार जैन को आज सिद्धांत चक्रवर्ती आचार्य विद्यानंद मुनिराज की 101 वीं जन्मजयंती के अवसर पर कुंदकुंद भारती, नई दिल्ली में आयोजित एक भव्य समारोह में ''आचार्य विद्यानन्द पुरस्कार'' से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम परमपूज्य आचार्य श्री श्रुतसागरजी मुनिराज के पावन सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री सतीश चंद्र जैन (SCJ) परिवार की ओर से प्रो. जैन को सम्मान राशि, प्रशस्ति पत्र एवं विशेष सम्मान-चिह्न भेंट किया गया। मंच पर उनकी धर्म पत्नी डॉ. रुचि जैन का भी विशेष सम्मान किया गया। ज्ञातव्य है कि प्रो. (डॉ.) अनेकांत कुमार जैन जैन धर्म दर्शन एवं प्राकृत भाषा के एक उत्कृष्ट विद्वान, प्रखर वक्ता, कुशल शिक्षक तथा विशिष्ट लेखक के रूप में जाने जाते हैं। आप वरिष्ठ विद्वान् प्रो. फूलचंद प्रेमी एवं विदुषी डॉ. मुन्नी पुष्पा जैन, वाराणसी के ज्येष्ठ सुपुत्र हैं तथा वर्तमान में आप श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में दर्शन शास्त्र पीठ के प्रमुख तथा जैन दर्शन के आचार्य हैं। समारोह में मूडबद्री के भट्टारक स्वामी जी एवं हस्तिनापुर के स्वामी रवीन्द्र कीर्ति जी, राज्य सभा सांसद मीनाक्षी जैन जी, तीर्थ क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री जंबूप्रसाद जी, वरिष्ठ विद्वान् प्रो. वीरसागर जैन जी आदि दिल्ली NCR जैन समाज के अनेक प्रतिष्ठित श्रेष्ठियों पदाधिकारियों की अपार उपस्थिति रही। आचार्य श्रुतसागर जी महाराज ने विशेष आशीर्वाद देते हुए कहा कि प्रो. जैन ने प्राकृत भाषा में पहला अखबार 'पागद भासा' प्रकाशित करके इतिहास बनाया है। अनेक शोध पूर्ण लेख एवं ग्रंथ लिखकर जो योगदान दिया है उसके आगे यह पुरस्कार कुछ भी नहीं है। कुंदकुंद भारती के महामंत्री श्री अनिल जैन की ओर से बताया गया कि प्रो. जैन का कार्य युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत है और यह सम्मान उनके दीर्घकालीन योगदान का प्रतीक है।

दिगंबर जैन खंडेलवाल सरावगी समाज, केंद्रीय इकाई कोटा के चुनाव संपन्न हुए

पारस जैन 'पार्श्वमणि', कोटा

कोटा, 3 मई 2026। दिगंबर जैन खंडेलवाल सरावगी समाज केंद्रीय इकाई के चुनाव रविवार को निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न हुए। चुनाव संदीप जैन (एडवोकेट), राकेश जैन (एडवोकेट) एवं सहयोगी चुनाव अधिकारियों के सानिध्य में आयोजित किए गए। मतदान आरोग्य नगर स्थित जैन जन उपयोगी भवन में सुबह 10:00 बजे से दोपहर 1:00 बजे तक हुआ। अध्यक्ष पद पर राकेश पाटोदी एवं कोषाध्यक्ष पद पर पवन पाटोदी निर्विरोध निर्वाचित हुए। महामंत्री पद के लिए कुंतीलाल ईश्वर सोनी, सन्मति कासलीवाल एवं पारस बज के बीच मुकाबला हुआ, जिसमें पारस बज विजयी रहे। मीडिया प्रभारी पारस जैन ने बताया कि चुनाव में वरिष्ठजनों व समाज के गणमान्य सदस्यों की उपस्थिति रही। पूर्व अध्यक्ष अशोक पहाड़िया व पूर्व महामंत्री महावीर शाह सहित अन्य सदस्यों ने नवनिर्वाचित कार्यकारिणी को बधाई दी। निर्विरोध चुनाव के लिए महेश गंगवाल, विनोद सोनी, राजकुमार पाटनी व मनोज नगेदा द्वारा नाम वापस लेने पर आभार व्यक्त किया गया। नवनिर्वाचित अध्यक्ष राकेश पाटोदी ने समाज के उत्थान हेतु निरंतर प्रयास करने तथा सामाजिक व धार्मिक कार्यों को प्राथमिकता देने की बात कही। नवीन कार्यकारिणी का कार्यकाल 2026 से 2028 तक रहेगा। जैन गजट संवाददाता पारस जैन 'पार्श्वमणि' ने बताया कि बाद में वात्सल्य भोज भी रखा गया।

मुनिश्री सुधा सागर जी सानिध्य में गुना में पंचकल्याणक

पुण्योदय अति. तीर्थक्षेत्र बजरंगगढ जी एवं गुना के समस्त नव निर्मित मंदिर जी के पंचकल्याणक महामहोत्सव की सम्भावित तारीख 16 जून 2026 का मंगल आशीर्वाद जगत पूज्य गुरुदेव मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महामुनिराज ससंघजी के पावन सानिध्य में प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्रह्मचारी श्रद्धेय प्रदीप भैया जी सुयश अशोकनगर के निर्देशन में सम्पन्न होंगे। पंचकल्याणक इन जिनालयों के होंगे- पुण्योदय अतिशय क्षेत्र बजरंगढ़, ऋषभोदय (नसिया जी), गुना, सर्वोदय ज्ञान तीर्थ (टोलनाका), गुना, शीतलनाथ जिनालय, गुना, मुनिसुब्रतनाथ जिनालय (छतरपुरिया एस्टेट) गुना।

वात्सल्य मूर्ति, कवि हृदय राजकीय अतिथि, आचार्य श्री 108 शशांक सागर जी मुनिराज के चरणों में शत् शत् नमन्

आचार्य श्री शशांक सागर जी महाराज श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर सेक्टर-3 मालवीय नगर, जिला जयपुर में विराजमान हैं।

आचार्य शशांक सागर वचन

जिनके चरणों में लगी हुई तीर्थों की पावन रजकण,
बड़े भाग्य से मिल पाता उन चरणों का स्पर्शन
जिनकी हितमित प्रिय वाणी हरती है धरती का क्रंदन,
ऐसे आचार्यश्री शशांक सागर जी के चरणों में हमारा शत् शत् वंदन

आचार्य 108 श्री सुन्दर सागर जी महाराज ससंघ के साथ हैं।

सामाजिक कार्य की जिम्मेदारी अर्थात संकटों से लड़ने की तैयारी।

-: नमनकर्ता/पुण्यार्जक :-

श्रेष्ठी विनित चांदवाड़ (सिद्धार्थ नगर, जयपुर)
श्रेष्ठी ऋषभ कुमार सेठी (अध्यक्ष तिलक नगर जयपुर)
श्रीमती राखी गंगवाल, (आदिनाथ नगर, जयपुर)
अनिल कुमार पाण्ड्या (बनेठा वाले)
गजेन्द्र बड़जात्या, (कामा वाले) जयपुर

श्रेष्ठी महेश-राकेश कुमार ठोल्या (मारूजी का चौक, जयपुर)
पवन कुमार बड़जात्या मरवावाले किशनगढ़
अशोक चांदवाड (वसुन्धरा कॉलोनी, जयपुर)
मधु जैन अध्यक्षा-श्री दिग. जैन मंदिर प्रतापनगर सेक्टर-3
कमल चंद छाबड़ा अध्यक्ष 1008 श्री शांतिनाथ दिग. जैन मंदिर मान्यवास, मानसरोवर जयपुर

विज्ञापन प्रेषक: R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatin777@gmail.com

सेवा धर्म समाज की आगम के अनकूल। यह पुनीत उद्देश्य है जैन गजट का मूल।।
जैन गज़ट शिकायत 9415008344 जैन गज़ट

भारतीय इतिहास की चुप्पी और जैन सम्राटों की अनसुनी गाथा पर शोध अध्ययन हों

संपादकीय

जैन धर्म के इतिहास में चंद्रगुप्त मौर्य, सम्राट खारवेल, राजा अमोघवर्ष, और चालुक्य/होयसल वंश के शासकों ने जैन धर्म को अत्यधिक संरक्षण दिया। इन राजाओं ने जैन विद्वानों को समर्थन दिया, गुफाएं बनवाई और कर्नाटक व कलिंग (ओडिशा) में धर्म का प्रसार किया। चंद्रगुप्त मौर्य ने अपने अंतिम दिनों में दिगम्बर जैन साधु के रूप में जीवन व्यतीत किया।

भारत का इतिहास केवल तलवारों की टकराहट और साम्राज्यों के विस्तार की कथा नहीं है, यह विचारों, मूल्यों और जीवन-दर्शन की भी यात्रा है। दुर्भाग्य से, इस यात्रा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अध्याय 'जैन सम्राटों का योगदान' इतिहास के पन्नों में या तो सिमट कर सीमित कर दिया गया है, या लगभग विस्मृत विलोपित कर दिया गया है।

जैन धर्म, जो अहिंसा, अपरिग्रह और आत्मसंयम जैसे सार्वकालिक मूल्यों पर आधारित है, केवल मठों और तीर्थों में जीवित नहीं रहाय इसे राजसत्ता का भी संरक्षण मिला। यह तथ्य जितना ऐतिहासिक रूप से सत्य है, उतना ही आज के विमर्श में अनुपस्थित भी है इसके लिए शोधपरक संगोष्ठी आयोजित हो।

जब हम चन्द्रगुप्त मौर्य का स्मरण करते हैं, तो उन्हें प्रायः एक विजेता के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, लेकिन उनके जीवन का अंतिम और शायद सबसे महत्वपूर्ण निर्णय जैन आचार्य भद्रबाहु के सान्निध्य में वैराग्य अपनाना इतिहास की मुख्यधारा में आध्यात्मिक चिंतन क्यों नहीं उभरता? क्या यह इसलिए कि त्याग वैराग्य की कथा, विजय की कथा से कम आकर्षक मानी जाती है? इसी प्रकार सम्प्रति, जिन्हें 'जैन अशोक' कहा जाता है, ने जिस व्यापक स्तर पर जैन धर्म का प्रचार-प्रसार किया, मंदिरों का निर्माण कराया और धर्मदूतों को दूर-दूर तक भेजा- वह किसी भी दृष्टि से एक सांस्कृतिक क्रांति से कम नहीं था। फिर भी, उनका नाम सामान्य पाठ्यक्रमों में लगभग अनुपस्थित है।

गुजरात के कुमारपाल ने तो एक कदम आगे बढ़कर शासन की आत्मा में ही जैन दर्शन को स्थापित किया। आज जब 'नैतिक शासन' की चर्चा होती है, तब कुमारपाल का उदाहरण क्यों नहीं दिया जाता?

दक्षिण भारत की वीरांगना रानी अब्बक्का चौटा इस परंपरा की एक और सशक्त कड़ी हैं। उन्होंने विदेशी आक्रमणों का सामना करते हुए न केवल राजनीतिक स्वतंत्रता की रक्षा की, बल्कि जैन संस्कृति को भी संरक्षण दिया। उनका व्यक्तित्व यह सिद्ध करता है कि आस्था और प्रतिरोध एक साथ चल सकते हैं।

यह सूची यहीं समाप्त नहीं होती। खारवेल से लेकर अमोघवर्ष प्रथम और दक्षिण के गंग वंश व होयसाल वंश तक-जैन धर्म को राजकीय संरक्षण देने वाले शासकों की एक लंबी परंपरा रही है। यह परंपरा केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और नैतिक भी थी फिर प्रश्न उठता है-इतिहास में यह मौन क्यों? संभवतः इसका उत्तर इतिहास लेखन की प्रवृत्ति में छिपा है, जहाँ युद्ध, विस्तार और सत्ता संघर्ष को प्राथमिकता दी गई, जबकि अहिंसा, संयम और नैतिक शासन को अपेक्षाकृत कम महत्व मिला। जैन परंपरा का शांत, अनाक्रामक स्वभाव भी इस उपेक्षा का एक कारण हो सकता है। लेकिन अब यह मौन टूटना चाहिए।

आज आवश्यकता है कि जैन सम्राटों की गौरवगाथा को केवल धार्मिक संदर्भ में नहीं, बल्कि भारत की समग्र सांस्कृतिक विरासत के हिस्से के रूप में पुनः स्थापित किया जाए। शैक्षिक पाठ्यक्रमों में संतुलन लाया जाए, शोध को प्रोत्साहन मिले और सार्वजनिक विमर्श में इन नामों को स्थान दिया जाए।

इतिहास केवल अतीत का लेखा-जोखा नहीं होता, वह वर्तमान की चेतना और भविष्य की दिशा भी तय करता है। यदि हम अपने ही इतिहास के महत्वपूर्ण अध्यायों को अनदेखा करेंगे, तो हमारी समझ अधूरी ही रहेगी।

जैन सम्राटों की गाथाएँ हमें यह सिखाती हैं कि शक्ति का सर्वोच्च रूप विजय नहीं, बल्कि संयम है और शासन का सर्वोच्च आदर्श विस्तार नहीं, बल्कि करुणा है।

अब प्रश्न यह नहीं कि इतिहास ने उन्हें कितना स्थान दिया अब तो प्रश्न यह है कि हम उन्हें कितना स्थान देने के लिए तैयार हैं।

- डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर
सह सम्पादक

प्राकृत भाषा ही क्यों सीखें ?

डॉ. यतीश जैन

प्राकृत भाषा भारतीय भाषिक परंपरा का वह सहज, लोकाभिमुख और जीवन-संवेदना से परिपूर्ण स्वरूप है, जिसने न केवल जनसामान्य के संवाद को अभिव्यक्ति दी, बल्कि धर्म, दर्शन, साहित्य और संस्कृति के गहनतम तत्वों को सरलतम रूप में प्रस्तुत करने का कार्य भी किया।

÷प्राकृत÷ शब्द की व्युत्पत्ति ÷प्रकृति÷ से मानी जाती है, जिसका अर्थ है-स्वाभाविक, प्राकृतिक या मूल रूप। इस दृष्टि से प्राकृत भाषा को मानव की सहज वाणी का प्रतिनिधि माना गया है, जो कृत्रिमता से रहित होकर लोकजीवन के निकटतम रूप में विकसित हुई। संस्कृत जहाँ परिष्कृत, व्याकरण-संपन्न और विद्वानों की भाषा रही, वहीं प्राकृत भाषा लोक जीवन में प्रवाहित होने वाली जीवंत अभिव्यक्ति के रूप में प्रतिष्ठित हुई, जिसने विचारों को व्यापक समाज तक पहुँचाने में सेतु का कार्य किया।

भारतीय धार्मिक परंपराओं में प्राकृत भाषा का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। जैन धर्म के तीर्थंकरों, विशेषतः महावीर ने अपने उपदेश अर्धमागधी प्राकृत में दिए, जिससे सामान्य जन भी गूढ़ आध्यात्मिक सिद्धांतों को सहजता से समझ सके। जैन आगम साहित्य का विशाल भंडार इसी भाषा में संरक्षित है, जिसमें आचारांग सूत्र और सूत्रकृतांग जैसे ग्रंथ प्रमुख हैं। इन ग्रंथों में न केवल धार्मिक अनुशासन और साधना का वर्णन है, बल्कि मानव जीवन के नैतिक, सामाजिक और दार्शनिक आयामों का भी अत्यंत सूक्ष्म विश्लेषण मिलता है। यदि इन ग्रंथों का अध्ययन अनुवाद के माध्यम से किया जाए, तो मूल भाव की सूक्ष्मता और अभिव्यक्ति की माधुर्यता पूर्णतः ग्रहण नहीं हो पातीय अतः प्राकृत भाषा का ज्ञान इन ग्रंथों की वास्तविक अनुभूति के लिए अनिवार्य हो जाता है।

बौद्ध परंपरा में भी प्राकृत (विशेषतः पालि) का व्यापक उपयोग हुआ। गौतम बुद्ध ने अपने उपदेश जनभाषा में देकर धर्म को जनसामान्य के लिए सुलभ बनाया। यह तथ्य दर्शाता है कि प्राकृत भाषाएँ केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं थीं, बल्कि वे सामाजिक समावेशिता और बौद्धिक लोकतंत्र की प्रतीक भी थीं। इन भाषाओं ने ज्ञान को किसी विशेष वर्ग तक सीमित न रखकर उसे सार्वजनीन स्वरूप प्रदान किया।

साहित्यिक दृष्टि से भी प्राकृत भाषा का योगदान अत्यंत समृद्ध और बहुआयामी है। प्राकृत में रचित गाथाएँ, काव्य और नाटक भारतीय साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं। महाराष्ट्री प्राकृत में रचित गाथा-सप्तशती जैसे ग्रंथों में श्रृंगार, प्रकृति और मानवीय भावनाओं का अत्यंत मार्मिक चित्रण मिलता है। संस्कृत नाटकों में भी प्राकृत का व्यापक प्रयोग हुआ है, जहाँ उच्च वर्ग के पात्र संस्कृत बोलते हैं और सामान्य जन प्राकृत में संवाद करते हैं। यह व्यवस्था उस समय के सामाजिक यथार्थ और भाषिक विविधता को स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित करती है।

भाषावैज्ञानिक दृष्टि से प्राकृत भाषा का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है, क्योंकि यह आधुनिक भारतीय भाषाओं की जड़ों को समझने में सहायक है। हिंदी, गुजराती, मराठी, बंगाली आदि अनेक भाषाएँ प्राकृत और अपभ्रंश के माध्यम से विकसित हुई हैं। अतः प्राकृत का ज्ञान इन भाषाओं की संरचना, शब्दावली और ध्वन्यात्मक परिवर्तन को समझने में मार्गदर्शक सिद्ध होता है। यह भाषा विकास की ऐतिहासिक प्रक्रिया का साक्ष्य भी प्रस्तुत करती है, जिससे भाषाओं के उत्क्रांति क्रम का वैज्ञानिक अध्ययन संभव होता है।

प्राकृत भाषा का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष धरोहर संरक्षण से संबंधित है। भारत में प्राप्त अनेक प्राचीन शिलालेख, ताम्रपत्र, हस्तलिखित पांडुलिपियाँ और अभिलेख प्राकृत भाषा में उपलब्ध हैं। यदि इस भाषा का ज्ञान लुप्त हो जाए, तो इन ऐतिहासिक स्रोतों का अध्ययन और संरक्षण अत्यंत कठिन हो जाएगा। अतः प्राकृत भाषा केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि सांस्कृतिक निरंतरता की आधारशिला है।

दार्शनिक और आध्यात्मिक दृष्टि से प्राकृत भाषा का महत्व और भी गहन हो जाता है। इस भाषा में अभिव्यक्त सिद्धांतों में सरलता, स्पष्टता और जीवनोपयोगिता का अद्भुत समन्वय मिलता है। अहिंसा, अपरिग्रह, सत्य, संयम जैसे मूल्यों को प्राकृत में जिस सहजता और प्रभावशीलता के साथ प्रस्तुत किया गया है, वह मनुष्य के अंतर्मन को सीधे स्पर्श करता है। यह भाषा केवल विचारों का संप्रेषण नहीं करती, बल्कि जीवन के उच्चतर आदर्शों की अनुभूति कराती है। अतः समग्र रूप में कहा जा सकता है कि प्राकृत भाषा भारतीय ज्ञान परंपरा की जीवनधारा है, जिसने धर्म, दर्शन, साहित्य, समाज और संस्कृति के विविध आयामों को एक सूत्र में पिरोया है। इसकी उपयोगिता केवल ऐतिहासिक या शैक्षणिक नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक है। यह भाषा हमें हमारी जड़ों से जोड़ती है, ज्ञान के मूल स्रोतों तक पहुँचने का मार्ग प्रशस्त करती है और सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण में हमारी भूमिका को सशक्त बनाती है। प्राकृत का अध्ययन न केवल अतीत की ओर दृष्टि डालना है, बल्कि वह भविष्य के लिए ज्ञान, मूल्य और परंपरा के संरक्षण का सुदृढ़ आधार भी है।

दृष्टि बदलो सृष्टि बदल जाएगी

- आर्यिका सिद्धमती जी

नौगामा। परम पूज्य विनम्र सागर महाराज की शिष्या सिद्धमति माताजी नौगामा नगर में विराजमान हैं। प्रातः माता जी सानिध्य में वागड़ के बड़े बाबा आदिनाथ भगवान की शांतिधारा, अभिषेक सानिध्य में किया गया। अभिषेक के बाद मंगल प्रवचन हुआ, प्रवचन में ईष्टोपदेश ग्रंथ के माध्यम से अपने प्रवचन में कहा कि अपनी दृष्टि बदलो सृष्टि बदल जाएगी, हमारी सोच को सकारात्मक रखें नकारात्मक नहीं, यह विचार बहुत ही गहरा और प्रेरणादायक है। जब हम अपनी दृष्टि (नजरिया) बदलते हैं, तो हमारे लिए पूरी सृष्टि (दुनिया) का अनुभव बदल जाता है हमारी सोच।

सकारात्मकता का प्रभावः अगर हम सकारात्मक नजरिया रखते हैं, तो हमें चुनौतियों में भी अवसर और लोगों में अच्छाइयां नजर आने लगती हैं।

स्वदेशी चेतना का आह्वान

सुगाल चंद जैन, चेन्नई

भारत को स्वतंत्र हुए लगभग आठ दशक पूर्ण होने को हैं। विदेशी शासन भले ही समाप्त हो गया हो, किन्तु ''अंग्रेजियत'' की मानसिकता आज भी हमारे जीवन के अनेक पहलुओं में गहराई तक समाई हुई दिखाई देती है। यह केवल भाषा का प्रश्न नहीं है, बल्कि सोच, व्यवहार और प्राथमिकताओं का विषय बन गया है। हमारे खान-पान, पहनावे, रहन-सहन और रीति-रिवाजों में धीरे-धीरे विदेशी प्रभाव बढ़ता जा रहा है। एक समय जो भारतीय परिधान-धोती-कुर्ता, साड़ी, लहंगा, ओढ़नी-हमारी पहचान हुआ करते थे, वे आज विशेष अवसरों तक सीमित होते जा रहे हैं। यदि यही प्रवृत्ति जारी रही, तो आने वाली पीढ़ियाँ इन्हें केवल संग्रहालयों में ही देख पाएंगी। यह केवल कपड़ों का परिवर्तन नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक पहचान का क्षरण है।

इसी प्रकार हमारी पारंपरिक मिठाइयों और भोजन की जगह केक, पेस्ट्री, पिज्जा और ब्रेड ने ले ली है। सुविधा और आकर्षण के नाम पर हम अपने स्वास्थ्य और परंपरा दोनों से दूर होते जा रहे हैं। आवश्यक नहीं कि हर आधुनिकता अनुकरणीय होय विवेकपूर्ण चयन ही सही दिशा दिखाता है।

त्योहारों की बात करें तो भारतीय पर्व, जो सामाजिक समरसता और आध्यात्मिकता के प्रतीक हैं, उनकी अपेक्षा विदेशी उत्सवों का दिखावा और उत्साह अधिक दिखाई देता है। यह चिंतन का विषय है कि जिन पर्वों ने हमें हजारों वर्षों तक जोड़े रखा, क्या हम स्वयं ही उनसे दूर होते जा रहे हैं?

शिक्षा के क्षेत्र में भी विदेशी पद्धति को ही श्रेष्ठ मानने की प्रवृत्ति बढ़ी है। गुरुकुल परंपरा, जिसमें जीवन मूल्यों और संस्कारों का समावेश था, उसे लगभग भुला दिया गया है। आयुर्वेद जैसी प्राचीन और वैज्ञानिक चिकित्सा पद्धति को भी हमने पूर्ण रूप से अपनाने में संकोच किया है, जबकि विश्व उसकी ओर आकर्षित हो रहा है।

संगीत और कला के क्षेत्र में भी यही स्थिति है। भारतीय शास्त्रीय संगीत और वाद्य यंत्रों की जगह तेज शोर-शराबे वाले विदेशी संगीत और डी. जे. संस्कृति को प्राथमिकता दी जा रही है। यह केवल मनोरंजन का परिवर्तन नहीं, बल्कि हमारी संवेदनाओं और सौंदर्य बोध में बदलाव का संकेत है।

भाषा के स्तर पर भी अंग्रेजी माध्यम को ही श्रेष्ठ मानने की होड़ लगी है। अपनी मातृभाषाओं और भारतीय भाषाओं के प्रति गर्व का भाव कम होता जा रहा है। जबकि भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि संस्कृति और विचारों की वाहक होती है।

यह प्रश्न स्वाभाविक है कि क्या इन सब परिवर्तनों के बाद भी हम स्वयं को पूर्णतः स्वतंत्र कह सकते हैं? राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त हो चुकी है, किन्तु मानसिक स्वतंत्रता अभी अधूरी प्रतीत होती है। यदि हमारी सोच, पसंद और जीवनशैली पर पराधीनता का प्रभाव बना रहे, तो यह स्वतंत्रता अधूरी ही कही जाएगी। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम आधुनिकता को स्वीकार करें, किन्तु अपनी जड़ों से जुड़े रहें। स्वदेशी को अपनाना किसी प्रकार की संकीर्णता नहीं, बल्कि आत्मगौरव का प्रतीक है। हमें अपने बच्चों को यह सिखाना होगा कि प्रगति का अर्थ अपनी पहचान खोना नहीं, बल्कि उसे सहेजते हुए आगे बढ़ना है। यदि प्रत्येक भारतीय यह संकल्प ले कि वह अपनी भाषा, संस्कृति, परंपरा और मूल्यों का सम्मान करेगा, तो निश्चित ही एक सशक्त और आत्मनिर्भर राष्ट्र का निर्माण होगा। हमें यह समझना होगा कि ÷भारतीय होना÷ केवल जन्म से नहीं, बल्कि विचार और व्यवहार से सिद्ध होता है।

आइए, हम सभी मिलकर यह प्रयास करें कि आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन स्थापित करें, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ गर्व से कह सकें-हम सच में स्वतंत्र भारत के स्वतंत्र नागरिक हैं।

संस्कार, शिक्षा और करियर के बीच फँसा जैन युवा

डॉ. संतोष जैन
काला (CA)
गुवाहाटी
मो. 9435048488

संस्कार, शिक्षा और करियर के बीच उलझता जैन युवाः आज का जैन युवा सचमुच एक ऐसे चौराहे पर खड़ा है जहाँ से तीन दिशाएँ एक साथ उसे खींच रही हैं-संस्कार, शिक्षा और करियर। ये तीनों ही जीवन के लिए आवश्यक हैं, पर विडंबना यह है कि आज इनका संतुलन बिगड़ चुका है। समस्या किसी एक रास्ते की नहीं, बल्कि उस समन्वय की है जो जैन दर्शन की आत्मा रहा है। परिणामस्वरूप युवा भीतर से बिखरता जा रहा है-बाहर से सफल दिखता है, पर भीतर से असमंजस और तनाव से घिरा हुआ है।

परिवार और समाज संस्कारों की बात करते हैं-अहिंसा, सत्य, संयम, सरलता और आत्मसंयम। बचपन से ही जैन युवा इन्हें सुनता है, पर जैसे-जैसे वह शिक्षा की दौड़ में आगे बढ़ता है, ये संस्कार किताबों और प्रवचनों तक सीमित हो जाते हैं। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था उसे प्रतिस्पर्धी बनाती है, संवेदनशील नहीं। वहाँ प्रश्न यह नहीं होता कि ''मैं कैसा इंसान बन रहा हूँ?'', बल्कि यह होता है कि ''मैं दूसरों से आगे कैसे निकलूँ?'' अंक, रैंक और डिग्री जीवन का मापदंड बन जाते हैं। तीसरी ओर करियर की दुनिया है, जहाँ सफलता का अर्थ केवल पैकेज, पद और प्रतिष्ठा तक सिमट गया है। यहाँ नैतिकता, करुणा और आत्मिक शांति को ''प्राइवेट मैटर'' मान लिया गया है। युवा दिन-रात मेहनत करता है, पर यह मेहनत आत्मविकास के लिए नहीं, बल्कि बाहरी मान्यता के लिए होती है। इसी कारण आज अनेक जैन युवा आर्थिक रूप से सफल होने के बावजूद मानसिक रूप से असंतुलित, अकेले और उद्देश्यहीन दिखाई देते हैं।

इस त्रिकोणीय दबाव में फँसा युवा न तो पूरी तरह धार्मिक रह पा रहा है, न ही शिक्षा से विवेक सीख पा रहा है और न ही करियर से संतोष। वह मंदिर जाता है, पर मन मोबाइल और मीटिंग में रहता है। वह अच्छी नौकरी करता है, पर भीतर एक खालीपन उसे लगातार कचोटता है। कारण स्पष्ट है-जीवन की दिशा बाह्य हो गई है, जबकि जैन दर्शन जीवन को अंतरमुखी बनने की प्रेरणा देता है। आचार्य कुन्दकुन्द का कथन- ''आत्मा का हित ही सच्चा हित है, शेष सब परहित हैं''-आज के संदर्भ में और भी प्रासंगिक हो जाता है। आत्महित का अर्थ स्वार्थ नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि, आत्मज्ञान और आत्मशांति है। पर आज का युवा आत्महित को भूलकर केवल बाहरी हितों में उलझ गया है-लोग क्या कहेंगे, समाज में मेरी छवि क्या होगी, पैकेज कितना है। समाधान त्याग में नहीं, संतुलन में है। शिक्षा को केवल रोजगार का साधन नहीं, बल्कि विवेक का माध्यम बनाना होगा। करियर को लक्ष्य नहीं, साधन मानना होगा। और संस्कारों को केवल परंपरा नहीं, बल्कि जीवन-शैली बनाना होगा। जैन युवा यदि यह समझ ले कि सफलता और शांति एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं, तो यह चौराहा उसके लिए संकट नहीं, संभावनाओं का द्वार बन सकता है। आज आवश्यकता है आत्ममंथन की-मैं क्या बन रहा हूँ, क्यों बन रहा हूँ और किस दिशा में जा रहा हूँ? जब यह प्रश्न जागेगा, तभी जैन युवा अपने जीवन को सही अर्थों में सफल और सार्थक बना पाएगा।

1. संस्कारः उपदेश बने, अभ्यास नहीं – जैन परिवारों में संस्कारों की चर्चा आज भी बहुत होती है। अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य और संयम-ये शब्द बचपन से ही बच्चों के कानों में पड़ते हैं। नवकार मंत्र सिखाया जाता है, मंदिर ले जाया जाता है, प्रवचन सुनवाए जाते हैं। बाहर से देखने पर लगता है कि संस्कारों की मजबूत नींव रखी जा रही है। पर जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता है, ये संस्कार जीवन के व्यवहार में उतरने के बजाय केवल भाषण और परंपरा बनकर रह जाते हैं। संस्कार बताए जाते हैं, पर जिए नहीं जाते। यही कारण है कि एक जैन युवक रोज मंदिर जाता है, पर कॉलेज में नकल को गंभीर अपराध नहीं मानता। व्यापार में ''थोड़ा बहुत झूठ÷ उसे व्यवहारिक लगता है। वह अहिंसा की बात करता है, पर सोशल मीडिया पर कटु शब्दों से दूसरों को आहत करता है। यह विरोधाभास व्यक्ति की नीयत से नहीं, बल्कि संस्कारों की अधूरी शिक्षा से पैदा होता है। उसे बताया गया कि क्या सही है, पर यह नहीं सिखाया गया कि कठिन परिस्थितियों में सही पर कैसे टिके रहना है। असल समस्या तब और गहरी हो जाती है जब घर के बड़े स्वयं उपभोग, प्रदर्शन और तुलना में डूबे रहते हैं। बच्चों को संयम का उपदेश दिया जाता है, लेकिन घर में दिखावा, अनावश्यक खर्च और

प्रतिस्पर्धा का वातावरण रहता है। ऐसे में बच्चा शब्दों से नहीं, आचरण से सीखता है। महावीर का कथन-''जो स्वयं चलता है, वही मार्ग दिखा सकता है''-यहाँ सीधा प्रश्न बन जाता है। जब माता-पिता स्वयं संस्कारों को जीवन में नहीं उतारते, तो युवा पीढ़ी के लिए वे केवल नैतिक स्लोगन बनकर रह जाते हैं। संस्कारों का वास्तविक अर्थ पूजा-पाठ तक सीमित नहीं है। संस्कार का मतलब है-ईमानदारी से जीना, गलत को गलत कहने का साहस रखना, और लाभ के सामने भी मूल्यों से समझौता न करना। जब तक जैन समाज यह नहीं समझेगा कि संस्कार प्रवचन से नहीं, उदाहरण से आते हैं, तब तक यह पीढ़ी संस्कारी कहलाएगी, बनेगी नहीं।

2. शिक्षाः ज्ञान नहीं, केवल दौड़ – आज की शिक्षा व्यवस्था जैन युवाओं को सोचने और प्रश्न करने की नहीं, बल्कि दौड़ने की ट्रेनिंग दे रही है। शिक्षा का उद्देश्य आत्मविकास और विवेक निर्माण होना चाहिए था, लेकिन अब वह केवल नौकरी पाने का साधन बन गई है। स्कूल से लेकर कॉलेज तक सफलता का पैमाना एक ही है-अंक, रैंक और पैकेज। यह शिक्षा युवक को सक्षम पेशेवर तो बनाती है, पर संतुलित मनुष्य नहीं। कई जैन युवाओं में दर्शन, साहित्य, समाज और जीवन-दर्शन को समझने की गहरी रुचि होती है। पर परिवार और समाज का दबाव तुरंत सामने आ जाता है- ''इसमें करियर नहीं है।'' परिणामस्वरूप वे ऐसे विषय चुन लेते हैं जिनमें मन नहीं लगता। पढ़ाई बोझ बन जाती है, तनाव बढ़ता है और धीरे-धीरे जीवन से आनंद खत्म होने लगता है। पढ़ा-लिखा युवा भीतर से भ्रमित और थका हुआ दिखाई देता है। आचार्य समंतभद्र का कथन- ''ज्ञान वही है जो विवेक जगाए, शेष सूचना है''-आज की शिक्षा व्यवस्था पर सीधी टिप्पणी है। आज शिक्षा सूचना दे रही है, पर विवेक नहीं। छात्र को यह नहीं सिखाया जाता कि सही और गलत में अंतर कैसे करें, असफलता को कैसे स्वीकार करें, और सफलता के साथ विनम्र कैसे रहें। उसे बस यह सिखाया जाता है कि दौड़ में पीछे नहीं रहना है।

जैन दर्शन शिक्षा को आत्मोन्नति का साधन मानता है, न कि केवल पेट भरने का उपाय। जब शिक्षा से आत्मचिंतन, करुणा और संयम गायब हो जाते हैं, तब वही शिक्षा भीतर से खोखला व्यक्ति तैयार करती है। आज जरूरत है ऐसी शिक्षा की जो करियर के साथ-साथ चरित्र भी गढ़े, वरना पढ़ा-लिखा युवा भी दिशाहीन ही रहेगा।

3. करियरः साधन नहीं, साध्य बन गया – करियर जीवन का साधन होना चाहिए था, पर आज वह जीवन का उद्देश्य बन गया है। जैन समाज में भी अब सबसे पहला प्रश्न यही होता है- ''कितना कमाता है?'' व्यक्ति का स्वभाव, उसके मूल्य, उसकी जीवनशैली और पारिवारिक संवेदनाएँ पीछे छूट जाती हैं। सफलता को केवल वेतन, पद और प्रतिष्ठा से तौला जाने लगा है।

अनेक जैन युवा ऊँचे पदों पर हैं, बहुराष्ट्रीय कंपनियों में काम कर रहे हैं, पर उनके पास माता-पिता के लिए समय नहीं है। मंदिर जाना, साधना करना और सेवा देना 'फुर्सत का काम' बन गया है। उनका जीवन स्क्रीन, मीटिंग और टार्गेट तक सिमट जाता है। बाहर से वे अत्यंत सफल दिखते हैं, पर भीतर से थके और असंतुष्ट होते हैं।

महावीर का स्पष्ट संदेश है-''अपरिग्रह ही स्वतंत्रता है।'' पर करियर की अंधी दौड़ युवा को परिग्रह का गुलाम बना रही है। अधिक कमाने की लालसा, अधिक पाने की होड़ और अधिक दिखाने की प्रवृत्ति उसे कभी संतोष नहीं लेने देती। जितना मिलता है, उससे अधिक की भूख पैदा होती जाती है।

समस्या करियर में नहीं, करियर को जीवन का केंद्र बना लेने में है। जब करियर साधन बना रहता है, तब वह जीवन को संवारता है। लेकिन जब वही साध्य बन जाता है, तब जीवन की बाकी सारी दिशाएँ सूखने लगती हैं-रिश्ते, साधना, सेवा और आत्मशांति। जैन युवा को यह समझना होगा कि करियर ऊँचा हो सकता है, पर जीवन उससे ऊँचा होना चाहिए।

4. आंतरिक संघर्षः बाहर सफल, भीतर खाली – संस्कार कुछ कहते हैं, शिक्षा कुछ और, करियर कुछ और-इन तीनों के बीच जैन युवा भीतर से लगातार संघर्ष करता रहता है। वह जानता है कि क्या सही है, पर करता वह है जो सुविधाजनक है। यही द्वंद्व धीरे-धीरे उसे भीतर से खोखला कर देता है। बाहर से सफलता दिखाई देती है, पर भीतर शून्यता घर कर जाती है।

एक जैन युवती कॉर्पोरेट जगत में सफल है, अच्छी कमाई करती है, समाज में प्रतिष्ठा है। वह दान भी देती है, सामाजिक कार्यक्रमों में भाग भी लेती है। फिर भी उसे लगता है कि उसका जीवन केवल दिखावा बन गया है। सोशल मीडिया पर मुस्कान है, पर मन में खालीपन है। यह खालीपन इसलिए है क्योंकि जीवन और मूल्यों के बीच दूरी बढ़ गई है। जैन दर्शन इस स्थिति को 'मिथ्यात्व' कहता है-जहाँ ज्ञान है, पर आचरण नहीं। व्यक्ति जानता सब है, मानता भी है, पर जीता नहीं। यही कारण है कि आज का युवा न पूरी तरह भौतिक सुख में संतुष्ट है, न आध्यात्मिक शांति में स्थिर। इस आंतरिक संघर्ष का समाधान बाहर नहीं, भीतर है। जब संस्कार आचरण बनें, शिक्षा विवेक जगाए और करियर साधन बना रहे, तब यह द्वंद्व समाप्त हो सकता है। वरना बाहर की सफलता भीतर की हार बनती रहेगी। यही आज के जैन युवा के लिए सबसे बड़ा आत्मचिंतन का विषय है।

5. समाधानः संतुलन की राह – आज जैन युवा जिन समस्याओं से जूझ रहा है, उनका समाधान किसी एक पक्ष को त्याग देने में नहीं है। न शिक्षा छोड़ना समाधान है, न करियर से मुँह मोड़ना और न ही आधुनिकता से भागना। वास्तविक समाधान संतुलन में है-ऐसा संतुलन जो जैन दर्शन की मूल भावना के अनुरूप हो। जैन धर्म ने कभी जीवन से पलायन नहीं सिखाया, बल्कि जीवन को जागरूकता और संयम के साथ जीने की कला सिखाई है।

सबसे पहला कदम है संस्कारों को व्यवहार में उतारना। परिवार में यदि सादगी होगी, तो बच्चे अपने आप दिखावे से दूर रहेंगे। यदि माता-पिता उपभोग पर नियंत्रण रखेंगे, तो संयम बच्चों के लिए उपदेश नहीं, स्वाभाविक आदत बनेगा। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि बच्चों के सामने लिए गए नैतिक निर्णय उनके जीवन की दिशा तय करते हैं। जब वे देखते हैं कि कठिन परिस्थिति में भी माता-पिता ईमानदारी और सत्य का चुनाव करते हैं, तब संस्कार शब्द नहीं, संस्कार शक्ति बन जाते हैं।

दूसरा आवश्यक पक्ष है शिक्षा को विवेक से जोड़ना। जैन दर्शन को केवल धार्मिक अनुष्ठान के रूप में नहीं, बल्कि तार्किक और वैज्ञानिक दृष्टि से समझाना होगा। बच्चों को प्रश्न पूछने की स्वतंत्रता देना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि बिना प्रश्न के विवेक नहीं जागता। शिक्षा व्यवस्था को भी केवल अंक और रैंक तक सीमित न रखकर मूल्य आधारित बनाना होगा, जहाँ करुणा, सहिष्णुता और आत्मसंयम को उतना ही महत्व मिले जितना अकादमिक उपलब्धियों को। ऐसी शिक्षा ही संतुलित और जागरूक नागरिक तैयार कर सकती है।

तीसरा और सबसे व्यावहारिक समाधान है करियर को धर्म से जोड़ना। करियर का अर्थ केवल अधिक कमाना नहीं, बल्कि ईमानदारी से कमाना होना चाहिए। सामाजिक उत्तरदायित्व को समझते हुए कार्य करना, समय व धन का संतुलित उपयोग करना-यही जैन दृष्टि से सफल करियर है। जब व्यक्ति अपने पेशे को समाज और आत्मा के कल्याण से जोड़ता है, तब काम बोझ नहीं, साधना बन जाता है।

आचार्य कुन्दकुन्द का सूत्र- ''जो आत्मा को साध लेता है, वही संसार को साध लेता है''-आज के संदर्भ में पूर्णतः प्रासंगिक है। आत्मसंयम और आत्मबोध से ही बाहरी जीवन संतुलित हो सकता है। यही संतुलन जैन युवा को भ्रम से बाहर निकाल सकता है।

उपसंहारः जैन युवा-समस्या नहीं, संभावना – आज का जैन युवा कमजोर नहीं है, बल्कि परिस्थितियों के दबाव में थोड़ा भ्रमित अवश्य है। उसके पास अमूल्य संस्कारों की विरासत है, आधुनिक शिक्षा की क्षमता है और करियर के असीम अवसर हैं। समस्या इन साधनों की नहीं, बल्कि सही दिशा के अभाव की है। जब दिशा स्पष्ट नहीं होती, तब साधन भी बोझ लगने लगते हैं। यदि जैन युवा को संतुलित मार्गदर्शन मिले, तो वह केवल अपने जीवन को ही नहीं, समाज और राष्ट्र को भी नई दिशा दे सकता है। उसकी सोच में अहिंसा है, व्यवहार में अनुशासन है और कर्म में परिश्रम की शक्ति है। आवश्यकता है इन तीनों को जोड़ने की। जैन दर्शन उसे सिखाता है कि जीवन का उद्देश्य केवल भौतिक सफलता नहीं, बल्कि आत्मिक उन्नति भी है। महावीर का अंतिम संदेश-''अप्पा सो परमप्पा'' -आज के युवा के लिए भी उतना ही प्रासंगिक है। जब युवा यह समझ लेता है कि आत्मा की शुद्धि ही सबसे बड़ा लक्ष्य है, तब उसके निर्णय बदलने लगते हैं। वह शिक्षा को बोझ नहीं, सीख मानता है, करियर को संघर्ष नहीं, सेवा मानता है और संस्कारों को परंपरा नहीं, जीवन की रीढ़ मानता है। जब जैन युवा इस सत्य को अपने आचरण में उतार लेगा, तब संस्कार, शिक्षा और करियर-तीनों उसके लिए संघर्ष नहीं, साधना बन जाएंगे। यही वह क्षण होगा जब जैन युवा समस्या नहीं, संभावना के रूप में उभरेगा-अपने लिए भी और पूरे समाज के लिए भी।

जैन धर्म एवं समाज की आज की ज्वलंत समस्याएँ

गतांक से आगे

डॉ. संतोष जैन काला,
(सी.ए.), गुवाहाटी

बाहरी भक्ति तभी प्रभावी है जब भीतर विनम्रता, दया और पवित्रता हो। केवल माला फेरने से नहीं, बल्कि अपने विचारों और कर्मों को सुधारने से धर्म प्रकट होता है। जब हम दूसरों की पीड़ा को अपनी पीड़ा समझते हैं, जब किसी जीव को कष्ट पहुँचाने से पहले हमारा मन काँप उठता है - तब हम सच्चे अर्थों में धर्म के मार्ग पर होते हैं। आज आवश्यकता है बाहरी आडंबर को त्याग कर भीतर के प्रकाश को जगाने की। धर्म का वास्तविक रूप सादगी, सेवा और सद्भाव में है। यदि हमारे मंदिरों के साथ-साथ हमारे हृदय भी स्वच्छ हों, तो वही सच्चा पूजन है। यदि हम दूसरों की सहायता करें, सत्य बोलें, लोभ से दूर रहें - तो वही सच्चा उपवास है। समय आ गया है कि हम अपने धर्म की मूल आत्मा को पुनः पहचानें। भव्यता नहीं, भावना चाहिए, प्रदर्शन नहीं, दिशा चाहिए। हमें फिर से उस जैन परंपरा को जीवित करना है जहाँ धर्म का उद्देश्य केवल ''जीव और जीव के कल्याण'' था। आइए, हम सब मिलकर इस आत्म जागरण की यात्रा प्रारंभ करें। अपने भीतर करुणा, क्षमा और संयम के दीप जलाएँ। यही इस युग की सच्ची साधना है और यही हमारे समाज के पुनर्जागरण का मार्ग है। क्योंकि अंततः - धर्म वही है जो जीवन को ढंग देता है, आत्मा को जाग्रत करता है और संसार में शांति का प्रकाश फैलाता है।

स्वाद के पीछे भागता समाज, सेहत से दूर होता जीवन

जंक फूड की स्टार रेटिंग क्यों नहीं होती? - डॉ. सुनील जैन 'संचय'

आधुनिक जीवन की भागदौड़ ने भोजन को भी सुविधा का विषय बना दिया है। कभी रसोई की धीमी आँच पर पकने वाला भोजन परिवार, परंपरा और स्वास्थ्य का प्रतीक था। आज उसकी जगह रंगीन पैकेटों, आकर्षक विज्ञापनों और त्वरित स्वाद ने ले ली है। बाजार की चमक ने थाली का स्वरूप बदल दिया है। अब भोजन केवल पेट भरने का साधन नहीं, बल्कि उपभोग की वस्तु बनता जा रहा है। ऐसे समय में यह प्रश्न अनिवार्य हो उठता है, जो हम खा रहे हैं, क्या वह सचमुच हमारे शरीर का मित्र है?

जंक फूड की सबसे बड़ी शक्ति उसका स्वाद नहीं, उसका भ्रम है। वह स्वादिष्ट दिखता है, तुरंत उपलब्ध होता है और क्षणिक आनंद देता है परंतु इस क्षणिक सुख के पीछे दीर्घकालिक हानि का मौन संसार छिपा रहता है। अत्यधिक नमक, चीनी, परिष्कृत मैदा, असंतुलित वसा और कृत्रिम तत्वों से बने ये खाद्य पदार्थ धीरे-धीरे शरीर की स्वाभाविक लय को बाधित करते हैं। जो वस्तु जीभ को प्रिय लगती है, वही शरीर के लिए बोझ भी बन सकती है। आज आवश्यकता इस बात की है कि भोजन के पैकेट पर केवल आकर्षक चित्र न हों, बल्कि स्पष्ट सत्य भी लिखा हो। उपभोक्ता को यह जानने का अधिकार है कि वह जो खरीद रहा है, उसमें पोषण कितना है और खतरा कितना। जैसे दवाओं पर चेतावनी लिखी जाती है, वैसे ही अस्वास्थ्यकर खाद्य पदार्थों पर भी साफ संकेत होने चाहिए। यदि किसी वस्तु में नमक, चीनी या वसा अत्यधिक है, तो यह जानकारी छिपी नहीं, सामने होनी चाहिए। यह केवल सरकारी नियम का विषय नहीं, जन स्वास्थ्य का प्रश्न है।

मोटापा, मधुमेह, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग और अनेक जीवनशैली संबंधी बीमारियाँ आज तेजी से बढ़ रही हैं। इन रोगों की जड़ में केवल निष्क्रिय जीवनशैली नहीं, बल्कि गलत खानपान भी है। बच्चे और युवा वर्ग विशेष रूप से विज्ञापनों के प्रभाव में आकर ऐसे खाद्य पदार्थों का सेवन कर रहे हैं, जिनके दुष्परिणाम तुरंत दिखाई नहीं देते, पर वर्षों बाद गंभीर रूप में सामने आते हैं। कितनी विडंबना है कि हम मोबाइल खरीदते समय उसकी बैटरी, कैमरा और फीचर पढ़ते हैं, पर भोजन खरीदते समय उसकी सामग्री तक नहीं देखते। हम वस्तुओं के लिए सतर्क हैं, पर अपने शरीर के लिए लापरवाह। जबकि शरीर ही वह आधार है, जिस पर जीवन की पूरी इमारत खड़ी है। यदि स्वास्थ्य डगमगा जाए, तो सुविधा, संपत्ति और सफलता सब फीकी पड़ जाती है।

स्पष्ट लेबलिंग और स्टार रेटिंग जैसी व्यवस्थाएँ इसलिए आवश्यक हैं कि उपभोक्ता भ्रम से मुक्त होकर निर्णय ले सके। यदि किसी पैकेट पर सरल भाषा में यह अंकित हो कि यह खाद्य पदार्थ स्वास्थ्य की दृष्टि से कितना सुरक्षित या हानिकारक है, तो व्यक्ति अधिक सजग होगा। बाजार में प्रतिस्पर्धा तब केवल स्वाद की नहीं, गुणवत्ता की भी होगी।

पर समाधान केवल नियमों से नहीं आएगा। परिवारों को भी अपनी भोजन संस्कृति पर पुनर्विचार करना होगा। बच्चों को घर का भोजन, ताजे फल, अनाज, दालें और पारंपरिक पौष्टिक व्यंजन प्रिय बनाना होंगे। यदि घर की थाली समृद्ध होगी, तो बाजार के पैकेटों का आकर्षण स्वयं कम होगा। भोजन केवल स्वाद नहीं, संस्कार भी है। समाज को यह समझना होगा कि रोग अचानक नहीं आते, वे धीरे-धीरे हमारी आदतों से जन्म लेते हैं। हर बार जब हम सुविधा को स्वास्थ्य पर चुनते हैं, तब भविष्य में बीमारी की एक ईंट रख देते हैं और हर बार जब हम संतुलित भोजन चुनते हैं, तब स्वस्थ जीवन की नींव मजबूत करते हैं। समय आ गया है कि हम चमकदार पैकेटों से अधिक उनके भीतर की सच्चाई पढ़ें। स्वाद क्षण भर का आनंद दे सकता है, पर स्वास्थ्य जीवन भर का उत्सव है। इसलिए अगली बार जब हाथ किसी जंक फूड की ओर बढ़े, तो जीभ से पहले विवेक से पूछिए-क्या यह केवल स्वाद है, या मेरे स्वास्थ्य की कीमत पर खरीदा गया भ्रम?

तिरुपति बालाजी: जैन मूल से वैष्णव मंदिर तक का ऐतिहासिक सफर

जिनेन्द्र जैन नरपतिया, दिल्ली

1\. **मूल मूर्ति की पहचान का तर्क:** इतिहासकारों और जैन विद्वानों का मानना है कि तिरुमाला की पहाड़ियों पर स्थापित मूल प्रतिमा 22वें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ की थी। इसके पीछे निम्नलिखित तर्क दिए जाते हैं:

- **दिगंबर स्वरूप:** मूर्ति का मूल ढांचा बिना किसी वस्त्र या जनेऊ के है, जो जैन दिगंबर परंपरा की पहचान है।
- **जटाएं:** मूर्ति के कंधों पर जटाएं दिखाई देती हैं। जैन धर्म में केवल प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ और कुछ विशेष संदर्भों में नेमिनाथ की मूर्तियों में ही जटाएं दिखाई जाती हैं।
- **ध्यान मुद्रा:** मूर्ति की आंखें आधी खुली और नाक की नोक पर टिकी हैं (नासाग्र दृष्टि), जो जैन ध्यान की मुद्रा है।

2\. 12वीं शताब्दी का विवाद और बदलाव: सबसे बड़ा बदलाव आचार्य रामानुजाचार्य के काल में माना जाता है। उस समय मंदिर पर शैव और वैष्णव दोनों अपना दावा कर रहे थे।

- **चिह्नों का समावेश:** जैन पक्ष का आरोप है कि इसी दौर में मूर्ति के हाथों में 'शंख' और 'चक्र' अलग से धातु के बनाकर जोड़े गए, क्योंकि मूल पत्थर की मूर्ति में ये अंग शरीर के साथ नहीं जुड़े थे।
- **श्रृंगार द्वारा आवरण:** मूर्ति को भारी वस्त्रों और आभूषणों से इस तरह ढकने की परंपरा शुरू की गई कि उसका मूल 'दिगंबर' स्वरूप छिप जाए। बड़ा तिलक (नामम) आँखों तक लगाया गया ताकि जैन ध्यान मुद्रा वाली आँखें न दिखें।

3\. **वह प्रसिद्ध 'सेटलमेंट' (1368 ईस्वी का समझौता):** आपने जिस समझौते का जिक्र किया, वह इतिहास में 'विजयनगर का समझौता' कहलाता है। यह राजा बुक्का राय प्रथम के समय हुआ था।

पृष्ठभूमि: उस समय जैनियों और वैष्णवों (श्री वैष्णव) के बीच भीषण हिंसा और विवाद छिड़ गया था। जैनियों ने राजा से शिकायत की थी कि वैष्णव उन्हें उनके धार्मिक अधिकार नहीं दे रहे हैं।

समझौते (शिलालेख) की प्रमुख शर्तें: राजा बुक्का राय ने एक शिलालेख जारी करवाया (जो आज भी श्रवणबेलगोला और अन्य स्थानों पर मौजूद है), जिसकी शर्तें ये थीं:

1. **समानता का अधिकार:** राजा ने घोषणा की कि जैन धर्म और वैष्णव धर्म में कोई अंतर नहीं माना जाएगा। दोनों एक ही शरीर के दो हाथ हैं।
2. **सुरक्षा की जिम्मेदारी:** वैष्णवों को आदेश दिया गया कि वे जैन मंदिरों और उनके त्योहारों की रक्षा उसी प्रकार करेंगे जैसे वे अपने मंदिरों की करते हैं।
3. **धार्मिक कर (Tax):** यह तय हुआ कि जैनियों से वसूला गया एक विशेष कर जैन मंदिरों के जीर्णोद्धार और वहां सुरक्षा के लिए नियुक्त पहरेदारों के वेतन में इस्तेमाल होगा।
4. **मर्यादा का पालन:** वैष्णव विद्वानों (तातय्या) को यह जिम्मेदारी दी गई कि वे सुनिश्चित करें कि किसी भी जैन मंदिर की मर्यादा भंग न हो।

निष्कर्ष: इस समझौते ने उस समय के दंगे तो शांत कर दिए, लेकिन जैन विद्वानों का कहना है कि इसी 'सेटलमेंट' की आड़ में तिरुपति जैसे कई केंद्रों पर जैन पहचान को पूरी तरह से वैष्णव पहचान में विलीन (डमतहम) कर दिया गया।

4\. **शिलालेख के साक्ष्य:** यह शिलालेख आज भी श्रवणबेलगोला के 'कलमवस्ती' मंदिर के पास देखा जा सकता है। इसे 'जैन-वैष्णव समझौता शिलालेख' कहा जाता है। इसमें स्पष्ट रूप से राजा द्वारा दोनों समुदायों के बीच हाथ मिलवाने और भविष्य में किसी भी विवाद को इसी समझौते के आधार पर सुलझाने की बात लिखी गई है।

सारांश: तिरुपति का इतिहास यह बताता है कि एक समय यह जैन प्रभाव वाला क्षेत्र था। धीरे-धीरे धार्मिक और राजनीतिक बदलावों के कारण और अंत में विजयनगर साम्राज्य के इन समझौतों के जरिए, इसे पूर्णतः वैष्णव तीर्थ का रूप दे दिया गया। आज जो रहस्य (जैसे पसीना आना या तापमान का बढ़ना) बताए जाते हैं, उन्हें जैन अनुयायी उस प्राचीन मूर्ति की चमत्कारिक ऊर्जा मानते हैं।

उगरियावास कस्बे में पार्श्वनाथ जिनालय में नवीन वेदी में विराजे श्रीजी

राजाबाबू गोधा, संवाददाता (राज.)

जयपुर परिक्षेत्र के उगरियावास कस्बे में गणिनी आर्यिका विज्ञाश्री माताजी की पावन प्रेरणा एवं आचार्य श्री प्रज्ञा सागर जी महाराज के पावन आशीर्वाद से 28.04.2026 से शुरू हुए दो दिवसीय नवीन वेदी प्रतिष्ठा महामहोत्सव कार्यक्रम विभिन्न आयोजनों के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में मंदिर समिति के सुरेंद्र कुमार जैन बड़जात्या ने बताया कि उक्त कार्यक्रम प्रतिष्ठाचार्य धर्मचंद शास्त्री के दिशा निर्देश में विभिन्न मंत्रोच्चारणों बीच संपन्न हुआ। कार्यक्रम में नवीन वेदी शुद्धि के पश्चात् श्रीजी का अभिषेक एवं शांतिधारा की गई, तत्पश्चात वास्तु विधान एवं विश्व शांति महायज्ञ का आयोजन हुआ, जिसमें सभी श्रद्धालुओं ने विश्वशांति एवं कल्याण की कामना करते हुए आहुतियां देकर सुख समृद्धि और खुशहाली की कामना की। मंदिर समिति के विकास जैन एवं आदित्य जैन ने बताया कि इससे पूर्व कार्यक्रम में श्रीजी को बैन्ड बाजों के साथ नगर भ्रमण कराया गया जिसमें सारा समाज, बच्चे, बच्चियों जयकारों के साथ नाचते गाते चल रहे थे। कार्यक्रम में मंदिर समिति के अध्यक्ष सुरेंद्र बड़जात्या ने बताया कि कार्यक्रम स्थल पर वेदी प्रतिष्ठा के साथ विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए गए जिसमें मूलनायक पार्श्वनाथ भगवान की जिन प्रतिमा अमित जैन, मनीष जैन, नेमिनाथ भगवान की जिन प्रतिमा नरेंद्र जैन, सुरेंद्र जैन, विनोद जैन एवं विकास जैन परिवार के द्वारा बोलियों के माध्यम से स्थापित की गई, इसी कड़ी में कलश एवं शिखर ध्वजदण्ड की स्थापना श्रीमती शांति देवी जैन बड़जात्या परिवार, रमेश चंद, सुशील कुमार, सुभाष चंद्र परिवार की ओर से की गई। उक्त आयोजन में गुड्डाबैरसल, ढींढा, ड्याणी, हिरनोदा, बोराज, आकोदा, फुलेरा, सहित आसपास के श्रद्धालुओं ने सहभागिता निभाते हुए शिरकत करते कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई, उक्त अवसर पर नरेंद्र जैन, कैलाश जैन, रमेश जैन, विनोद जैन, सुरेंद्र जैन, सुशील जैन, सुभाष जैन, मूलचंद जैन, राजेश जैन, चिरंजीलाल जैन, रमेश जैन, सुभाष छाबड़ा, विनोद गोधा, महावीर प्रसाद जैन, धन्ना लाल प्रजापत, कैलाश शर्मा, गोविंदराम सहित सभी श्रद्धालु उपस्थित थे।

प्रसिद्ध समाजसेवी श्री सन्त कुमार जैन को जैन रत्न एवं समाज शिरोमणी उपाधि से नवाजा गया

टोडारायसिंह समाज ने जैन रत्न की प्रशस्ति देकर वाचन किया

राजाबाबू गोधा, संवाददाता (राज.)

4 मई 2026, टोडारायसिंह। श्री दिगम्बर जैन खण्डेलवाल सरावगी समाज द्वारा जैन भवन पर सरावगी समाज के मुख्य संयोजक एवं समन्वयक सुरेंद्र मोहन जैन की अध्यक्षता में बैठक आयोजित हुई जिसमें जिला कार्यकारिणी को स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस दौरान जैन समाज टोडारायसिंह ने जैन समाज के अध्यक्ष एवं सरावगी समाज जिलाध्यक्ष प्रसिद्ध समाजसेवी श्री संत कुमार जैन एवं सुशीला देवी जैन को पंचरंगा साफा एवं माला पहनाकर जैन रत्न समाज शिरोमणी उपाधि से नवाजा गया, जहां सम्पूर्ण जैन भवन परिसर जयघोष से गूंज उठा। कार्यक्रम में संयोजक सुरेंद्र मोहन जैन ने बताया कि उक्त कार्यक्रम में राजस्थान सरकार जलदाय मंत्री कन्हैयालाल चौधरी, कृषि मंडी चेयरमैन महावीर धाकड़, अमित कासलीवाल, समाज के मंत्री अशोक कासलीवाल, उपाध्यक्ष अमित कटारिया, महिला जिलाध्यक्ष रेखा जैन, मंत्री विजया टोंग्या, ब्लॉक अध्यक्ष अनिता छाबड़ा, सपना गोधा उनियारा, विमल जौंला, राकेश संधी, रमेश चंद काला, दिनेश पाटोदी, प्रकाश चंद सोनी, मूलचंद त्रिलोक चंद हर भगतपुरा, एडवोकेट तेजमल जैन, पदमचंद अलियारी, शिखरचंद काला, महावीर प्रसाद छाबड़ा, हेमचंद संधी, मनोज पाटनी, नितिन छाबड़ा, ज्ञानचंद पहाड़ी, ज्ञानचंद लुहारा, राजकुमार संधी, मुकुल जैन, बसन्ती लाल जैन, योगेन्द्र सर्राफ, जम्बू कुमार जैन, राजेन्द्र सर्राफ, धनराज जैन, अनुज कासलीवाल, निरमेश कासलीवाल, सुरज्ञानी लाल, पदमचंद कासलीवाल, सहित जिला कार्यकारिणी, ब्लॉक कार्यकारिणी एवं जैन समाज टोडारायसिंह ने समाज सेवी एवं प्रसिद्ध मुनि भक्त श्री संत कुमार जैन को जैन रत्न समाज शिरोमणी उपाधि से नवाजा गया एवं जैन रत्न उपाधि की प्रशस्ति देकर सम्मानित किया। जैन रत्न उपाधि देते समय सभी कार्यकारिणी पदाधिकारियों ने भगवान महावीर के जयकारों से गुंजयमान कर दिया। कार्यक्रम में मंच संचालन अविनाश बाकलीवाल ने किया। इस अवसर पर समाज के संयोजक सुरेन्द्र मोहन जैन, सन्त कुमार जैन, अशोक कुमार कासलीवाल ने सभी लोगों का आभार जताया।

जयपुर शहर में तीर्थंकर ग्रुप का हुआ भव्य शपथ ग्रहण समारोह सम्पन्न

संवाददाता

जयपुर शहर में दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप तीर्थंकर जयपुर की कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र संघीजी मंदिर सांगानेर में 3 मई 2026 को हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ, कार्यक्रम में तत्कालीन अध्यक्ष डा. एम .एल जैन मणि ने बताया कि तीर्थंकर ग्रुप की मीटिंग में इन्दौर से निर्देशित श्री राजेश-सीमा बड़जात्या अतिरिक्त राष्ट्रीय महासचिव ने यह कार्य किया। इनका चयन फेडरेशन के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मनोहर झांझरी जी ने किया। श्री राजेश बड़जात्या ने तीर्थंकर ग्रुप के सभी सदस्यों को शपथ दिलाई, जिसमें सबसे पहले निदेशक मंडल को फिर विभिन्न उपाध्यक्ष स्तर के पदाधिकारियों को व अन्त में कोषाध्यक्ष, सचिव व अध्यक्ष को बारी-बारी से शपथ दिलाई। कार्यक्रम में इससे पूर्व अध्यक्ष डा. एम. एल जैन मणि-डा. शान्ति जैन मणि ने अतिरिक्त राष्ट्रीय महासचिव व उनकी धर्म पत्नी का माला, दुपट्टा व साफा पहनाकर, मोमेंटो भेंट कर सम्मानित किया। सचिव सुरेश गंगवाल ने आभार व्यक्त किया।

आर्यिका रत्न श्री जिनदेवी माताजी ससंघ का बड़जात्या परिवार के आवास पर हुआ भव्य मंगल आगमन

राजाबाबू गोधा, संवाददाता (राज.)

02.05.2026। जयपुर दुर्गापुरा में प्रसिद्ध समाजसेवी सुरेंद्र कुमार बड़जात्या उगरियावास वालों के निवास पर 02.05.2026 को पूज्य गुरु मां जिनदेवी माता जी का बैंड बाजों के साथ भव्य मंगल प्रवेश हुआ, कार्यक्रम में सुरेंद्र जैन बड़जात्या एवं आदित्य जैन बड़जात्या ने बताया कि गुरु मां जिनदेवी माता जी की चरणरज से हमारे घर का कण कण पवित्र हो गया। वीर प्रभु के असीम आशीर्वाद एवं अनुकम्पा से आज हमारे निवास स्थान पर गुरु मां जिनदेवी माताजी एवं मंगलमति माताजी की आहार चर्या निर्विघ्न सम्पन्न हुई गुरु मां को त्रिबार वन्दामि, वन्दामि, वन्दामि। गुरु मां ने सभी श्रद्धालुओं को मंगलमय आशीर्वाद प्रदान किया।

विमल जौंला सरावगी समाज टोंक जिला के जिला प्रवक्ता मनोनीत

संवाददाता

3 मई। श्री दिगम्बर जैन खण्डेलवाल सरावगी समाज टोंक के संयोजक श्री सुरेंद्र मोहन जैन के निर्देशन में टोंक जिला अध्यक्ष संत कुमार जैन ने निवाई शहर निवासी श्री विमल जौंला की समाज के प्रति सराहनीय सेवाओं को देखते हुए सरावगी समाज के टोंक जिला के जिला प्रवक्ता पद पर सर्व सम्मति से मनोनीत किया है।जौंला की नियुक्ति से समग्र जैन समाज में खुशी की लहर दौड़ पड़ी, उक्त कार्यक्रम में समाज के प्रवक्ता मुकुल जैन ने यह जानकारी दी है, उन्होंने बताया कि विमल पाटनी जौंला राजस्थान सरकार एवं प्रशासन ने सम्मानित किया है, उन्होंने कहा कि विमल जौंला समाज में 30 वर्षो से विभिन्न पदों पर रहकर साधु संतों की तथा समाज की सेवा करते आ रहे हैं, तथा निष्पक्ष रूप से धर्म की प्रभावना बढ़ाते हुए प्रचार-प्रसार करते हुए समग्र जैन समाज को एक मंच पर लाकर खड़ा किया।

प्रसिद्ध वास्तु विशेषज्ञ श्री विनोद जैन शास्त्री की सेवाओं में विशेष दोष निवारण की सटीक जानकारी

जन्मपत्री विशेषज्ञ, वास्तु, ज्योतिष परामर्श व समाधान हेतु शीघ्र सटीक उपाय के लिए संपर्क करें

राजाबाबू गोधा, संवाददाता (राज.)

30 अप्रैल। जयपुर शहर के जाने-माने वास्तुशास्त्र विशेषज्ञ विनोद जैन कि सेवाओं में विशेष दोष निवारण की सटीक जानकारी प्राप्त करें -

➲ ऑनलाइन सेवाएं ➲ कंप्यूटर से जन्म पत्रिका बनवाने ➲ जन्म पत्रिका दिखाने ➲ राशि रत्न भाग्य रत्न शुभ रत्न प्राप्त करने ➲ सभी प्रकार से मनोवांछित शुभ कार्यों के लिए यंत्र प्राप्त करने ➲ दत्यापत्य सुख विचार हेतु भाग्योदय का समय जानने हेतु व्यवसाय विचार ग्रह शांति उपाय शारीरिक रोग महादशा फल जानने ➲ विवाह संतान विलंब के कारण में निवारण ➲ ध्यान से व्यापार में आशा से अधिक लाभ करने के उपाय ➲ ध्यान से सभी प्रकार के रोग दूर करने ➲ मकान दुकान फैक्ट्री में वास्तु दोष निवारण ➲ धन योग राजयोग मकान योग जन ज्योतिष वास्तु ज्ञान से संबंधित कई प्रश्नों के उत्तर ➲ विवाह के मामले में कुंडली मिलन की निशुल्क व्यवस्था ➲ अष्टक वर्ग के द्वारा सटीक फल प्राप्त करने हेतु।

शतरंज की उभरती सितारा वाणी जैन ने 15वें जन्मोत्सव को बनाया आध्यात्मिक प्रेरणा का अद्भुत पर्व

संवाददाता

5 मई 2026। जयपुर शहर में शतरंज जगत में अपनी प्रतिभा से देश का नाम रोशन करने वाली होनहार बालिका वाणी जैन ने अपने 15वें जन्मोत्सव को अत्यंत आध्यात्मिक एवं प्रेरणादायी रूप में मनाते हुए दिव्य तपस्वी, राष्ट्र संत, समाधि सम्राट आचार्य 108 श्री सुंदर सागर जी महाराज ससंघ के पावन सान्निध्य में पहुंचकर उनके दर्शन किए और मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। इस पावन अवसर पर वातावरण भक्तिमय हो उठा, जब बालिका वाणी ने श्रद्धा, विनम्रता और आस्था के साथ आचार्य श्री के चरणों में नमन किया। कार्यक्रम में आचार्य श्री ने स्नेहपूर्वक आशीर्वाद प्रदान करते हुए वाणी के उज्ज्वल भविष्य की कामना की और कहा कि जीवन में सफलता केवल प्रतिभा से नहीं, बल्कि संयम, संस्कार और सत्कर्मों से प्राप्त होती है। जो बालक-बालिकाएं अपने लक्ष्य के साथ-साथ धर्म और संस्कृति से जुड़े रहते हैं, वे निश्चित ही समाज और राष्ट्र का गौरव बनते हैं। आचार्य श्री ने आगे कहा कि वाणी जैसी प्रतिभाशाली बालिकाएं न केवल अपने परिवार, बल्कि पूरे समाज और देश के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। उन्होंने वाणी को निरंतर आगे बढ़ते रहने, विनम्र बने रहने और अपने ज्ञान व कौशल का उपयोग समाज हित में करने का संदेश दिया।

विश्व जैन संगठन करेगा नेमिनाथ भगवान मोक्षस्थल गिरनार के लिए श्री नेमि गिरनार धर्म यात्रा का आयोजन

भगवान सुपार्श्वनाथ के जन्म तप कल्याणक पर 25 जून 2026 को होगा शुभारंभ

मुरैना (मनोज जैन नायक)। गुजरात प्रांत में स्थित सबसे ऊंचे पर्वतराज की सबसे ऊंची चोटी से मोक्ष प्राप्त करने वाले यदुवंशी श्री कृष्ण के चचेरे भाई 22वें जैन तीर्थंकर नेमिनाथ भगवान के निर्वाण दिवस पर मोक्षस्थल श्री उर्जयंत गिरनार जी के दर्शन वंदना के लिए समस्त जैन समाज की सहभागिता हेतु 5 मई 2026 को विश्व जैन संगठन के दिल्ली कार्यालय में विशेष सभा आयोजित की गई।

विश्व जैन संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संजय जैन ने विशेष सभा में भगवान नेमिनाथ निर्वाण दिवस पर संपूर्ण भारत से जैन समाज को गिरनार जी वंदना करने का निवेदन जैन समाज तक पहुंचाने के लिए 25 जून 2026 को सुपार्वनाथ भगवान के जन्म तप कल्याणक पर दिल्ली से गिरनार जी तक अनेकों राज्यों से होकर जाने वाली लगभग 5100 किमी लंबी 25 दिवसीय 'श्री नेमि गिरनार धर्म यात्रा' की घोषणा की। श्री संजय जैन ने बताया कि 20 जुलाई 2026 को जैन समाज के गिरनार जी पर सुरक्षित दर्शन वंदना हेतु केंद्र सरकार, गुजरात सरकार, पुलिस महानिदेशक और जूनागढ़ कलेक्टर व पुलिस अधीक्षक को निवेदन पत्र प्रेषित कर दिया है और निवेदन किया कि सोशल मीडिया में भड़काऊ वीडियो मैसेज पोस्ट कर दो समुदायों को लड़वाकर गिरनार जी पर्वतराज के पावन दर्शन वंदना में विघ्न पैदा करने का प्रयास करने वाले दोषियों के विरुद्ध सख्त कार्यवाही हो क्योंकि गुजरात हाई कोर्ट ने 17 फरवरी 2005 को पारित आदेश में पुलिस प्रशासन को प्रत्येक श्रद्धालु की सुरक्षा का निर्देश दिया है।

संगठन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री यश जैन ने भगवान नेमिनाथ की जन्मस्थली शौरीपुर बटेश्वर के दर्शन करने और सभी सदस्यों को अपने परिवार व मित्रों को संगठन से जोड़ने का आह्वान किया।

तीर्थ क्षेत्र कमेटी गुजरात अंचल अध्यक्ष श्री पारस बज द्वारा गिरनार आने वाले सभी जैन श्रद्धालुओं को भोजन और रहने आदि की व्यवस्था किए जाने की सूचना संजय जैन द्वारा सभा को दी गई। तीर्थ क्षेत्र कमेटी दिल्ली अंचल अध्यक्ष श्री प्रद्युम्न जैन ने संपूर्ण भारत में विराजमान सभी पूज्य संतों का आशीर्वाद और मार्गदर्शन लेने का सुझाव दिया।

संगठन के कोषाध्यक्ष मयंक जैन, मीडिया प्रभारी आकाश जैन, सम्मानित सदस्य अनुज जैन, निपुण जैन, अभिषेक जैन पीएनबी, गौरव जैन, युवा प्रकोष्ठ महामंत्री सागर जैन (सरधना), संगठन की लक्ष्मी नगर शाखा अध्यक्ष अतुल जैन, कोषाध्यक्ष अमित जैन, सीए विपुल जैन (मौजपुर), सुमित जैन (कबूल नगर) और अन्य सदस्यों ने सभी सहयोगी संस्थाओं व बंधुओं का सहयोग लेकर धर्म यात्रा को सफल बनाने हेतु सुझाव दिए और पूर्ण सहयोग करने के लिए आश्वस्त किया।

मन का सुख और आत्म सुख या मन का सन्तोष या आत्म सन्तोष

- अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी

नरेंद्र अजमेरा/पियुष कासलीवाल

औरंगाबाद/परतापुर। अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज एवं उपाध्याय पियूष सागरजी महाराज ससंघ परतापुर बांसवाड़ा राजस्थान में विराजमान हैं। उनके सानिध्य में वहां विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम संपन्न हो रहें हैं उसी श्रृंखला में उपस्थित गुरु भक्तों को संबोधित करते हुए आचार्य श्री ने कहा कि मन का सुख तत्कालिक है, आत्म सुख त्रिकालिक है।

मन का सन्तोष बुद्धि जन्य है,
आत्म सन्तोष चेतना जन्य है।
मन के सन्तोष में सुख है और आत्म सन्तोष में सुख ही सुख है।

मन का सुख कुछ लोगों को झूठ बोलने में, दोषारोपण करने में, दुर्व्यवहार-दुर्व्यसनों में, निन्दा आलोचना करने में, अच्छे कार्यों में, टांग खीचने में सुख मिलता है। जिसे हम आत्म सुख नहीं कह सकते। 'स्वार्थ पूर्ण और

संशयात्मक वृत्ति होने से मिल जायेगा लेकिन आत्म सन्तोष और आत्म सुख नहीं। जब चेतना निस्वार्थ और फिर निर्विकार भाव पूर्वक कार्य क्रिया करता है, तो वास्तविक आत्म संतुष्टि मिलती है। आत्म सन्तुष्टी से ही सुख शान्ति और आत्म विशुद्धि बढ़ती है। मनुष्य जब मन के सुख और आत्म सुख को समझ लेता है या जान लेता है, तो आत्म सुख के अनुसार जीवन जीना प्रारंभ कर देता है। जब मनुष्य आत्म-सुख के आनंद को प्राप्त करता है, तब उसका जीवन केवल स्वार्थ के लिये नहीं, बल्कि परार्थ के लिये हो जाता है। उसका चिन्तन और आचरण, लोक-मंगल के लिए समर्पित हो जाते हैं। सभी जीवों के प्रति श्रद्धा, विश्वास, सेवा, परोपकार भाव आत्म सन्तुष्टी में परिलक्षित होने लगते हैं। आत्म सन्तुष्टी के बिना मानव जीवन का उद्देश्य ना तो पूर्ण होता है और ना ही विधाता की मानवीय सृष्टी का प्रयोजन सिद्ध होता है। इसलिए आत्म-सुख और आत्म-सम्मान सन्तुष्टि के लिये जीवन जियो और सत्कर्म करो तभी जीवन का मूल वसूल होगा। अन्यथा जीवन -गजस्नान वत समझना।

दिल्ली के विवेक विहार में भीषण अग्निकांड में जैन समाज के 9 लोगों की मृत्यु

पुनीत जैन

नई दिल्ली/शाहदरा। दिल्ली के शाहदरा इलाके के विवेक विहार में गत रविवार तड़के एक चार मंजिला इमारत में भीषण आग लगने से 9 लोगों की दर्दनाक मौत हो गई, जबकि 10 से 15 लोगों को रेस्क्यू कर बचाया गया। हादसे में 2 लोग घायल भी हुए हैं। शाहदरा के डीसीपी राजेंद्र प्रसाद मीणा ने बताया कि सुबह करीब 4 बजे आग लगने की सूचना मिली। आग इमारत के 5-6 फ्लैट्स में फैल गई थी। रेस्क्यू के दौरान अलग-अलग फ्लोर से शव बरामद किए गए। पहली मंजिल से 1 शव, दूसरी मंजिल से 5 शव, तीसरी मंजिल की सीढ़ियों से 3 शव। बताया गया कि सीढ़ियों का मुख्य गेट लॉक था, जिससे लोग बाहर नहीं निकल सके। कुछ शव जली हुई (कंकाल) अवस्था में मिले। डीसीपी ने बताया कि मौके पर 10 से ज्यादा फायर ब्रिगेड की गाड़ियां पहुंचीं और करीब 15 लोगों को बालकनी व खिड़कियों के जरिए बाहर निकाला गया। घायलों को गुरु तेग बहादुर (GTB) अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

इमारत के पिछले हिस्से में लगी थी आग

- दिल्ली फायर सर्विस (DFS) के अधिकारी मुकेश वर्मा ने बताया कि सुबह 3:47 बजे कॉल मिली, जिसके बाद तुरंत दमकल टीम मौके पर पहुंची। इमारत में चार मंजिलें थीं। हर फ्लोर पर 4BHK फ्लैट बने थे। आग इमारत के पिछले हिस्से में लगी थी। खिड़कियों पर लगी सेफ्टी ग्रिल्स के कारण रेस्क्यू ऑपरेशन में काफी दिक्कतें आईं। मृतकों के नाम शिखा जैन (45), अनिता जैन (58), निशांत जैन (35), अंचल जैन (33), नितिन जैन (50), शैली जैन (48), सम्यक जैन (25), अरविंद लाल (60) एक शव की पहचान अभी नहीं हो सकी है।

सोनीनगर जैन मन्दिर से 49 सदस्यीय दल अष्टापद बद्रीनाम धाम की यात्रा पर

संजय कुमार जैन, प्रवक्ता

अजमेर, 4 मई 2026। श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर सोनीनगर अजमेर के 49 सदस्यीय दल 9 दिवसीय यात्रा डॉ.राजकुमार के संयोजकत्व में अष्टापद बद्रीनाथ धाम की यात्रा पर स्पेशल बस द्वारा आज प्रातः 7.30 बजे भगवान आदिनाथ के कलशाभिषेक कर प्रस्थान हुआ। प्रवक्ता संजय कुमार जैन ने जानकारी दी कि यह यात्रा दल डॉ. राजकुमार गोधा व सहयोगियों के संयोजकत्व में प्रातः प्रस्थान हुआ जो पदमपुरा, बडगांव, तरूणसागर तीर्थ, जम्बूद्वीप, हस्तिनापुर, हरिद्वार, अष्टापद बद्रीनाथ धाम, माना गांव, श्रीनगर, जोषी मठ, रिषीकेष, गुसिधाम, तिजारा होते हुये वापस आवेगी। 8 वर्षीय दक्षत गंगवाल भी इस यात्रा में जा रहे हैं। कमल बाकलीवाल ने बताया कि उतराखंड के नवीन नियमों के अनुसार यात्रा हेतु सभी यात्रियों का पंजीयन हो चुका है। दिनांक 9 मई को बद्रीनाथ धाम के दर्शन की अनुमति प्राप्त कर ली गई। यात्रा बस नरेन्द्र सोगानी के निर्देशन में जायेगी। श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के संभाग संयोजक संजय कुमार जैन व संभाग महामंत्री कमल गंगवाल व विजय पांड्या ने सभी यात्रियों को माला पहनाकर स्वागत किया व अनुमोदना की आपकी यात्रा मंगलमय हो।

समाजसेवी वैद्य संजय जैन का निधन

रत्नेश जैन रागी बकस्वाहा

बकस्वाहा। निकटवर्ती नगर घुवारा के सुप्रसिद्ध शिक्षक एवं समाजसेवी वैद्य संजय जैन का बीमारी के चलते गुरुवार सुबह दुखद निधन हो गया है। श्री जैन एक वरिष्ठ शिक्षक एवं समाजसेवी के रूप में प्रख्यात हैं। शिक्षा के क्षेत्र में असाधारण उत्साह व उच्च कोटि की सेवाओं के लिए आपको राष्ट्रपति पुरस्कार, राज्यपाल पुरुस्कार, राज्य स्तरीय आचार्य सम्मान सहित अनेक सम्मान प्राप्त हुए हैं, वर्तमान में सकल दिगम्बर जैन समाज घुवारा समिति और शीतलधाम बड़ा मंदिर घुवारा समिति के मंत्री पद पर रहकर समाज को सेवाएं दे रहे थे, साथ ही सन्मति बाल संस्कार केंद्र घुवारा के संचालन में सहयोग कर रहे थे, श्री जैन के निधन से संपूर्ण जैन समाज के लिए अपूर्णीयक्षति हुई है एवं घुवारा सहित सम्पूर्ण क्षेत्र में शोक की लहर व्याप्त है।

समस्या समाधान - रवि जैन गुरूजी

प्रश्न 1. बिटिया की उम्र 19 वर्ष है उसका एडमिशन भारत के अच्छे कॉलेज में हो गया मगर उसका मन नहीं लग रहा क्या करें? - शशांक गोधा, उदयपुर

उत्तर - शशांक जी, बिटिया की कुंडली में चल रही राहु में शनि की दशा इसका मुख्य कारण है। इसलिये नीली का लॉकेट शनिवार को धारण करायें।

प्रश्न 2. मेरी उम्र 76 वर्ष है मगर मैं अभी भी कोई व्रत, नियम आदि नहीं ले पाती। मैं धर्म के मार्ग पर चलूं, इसके लिये क्या करूं? - आशा, दिल्ली

उत्तर - आशा जी, आपकी कुंडली में सूर्य नीच का विराजमान है इसलिये आपको चाहिये माणिक्य रत्न का लॉकेट रविवार को धारण करें, लाभ होगा।

प्रश्न 3. मेरे जोड़ों में दर्द रहता है ठीक से चल भी नहीं पाता, काफी इलाज किया, मगर कोई लाभ नहीं हो पाया। क्या ज्योतिष में कोई उपाय है? - हितेन्द्र काला, अहमदावाद (गुजरात)

उत्तर - आपकी कुंडली में शनि 6वें भाव में नीच का बैठा हुआ है। शनि के कारण ही जोड़ों में दर्द होता है। शनिवार को श्री मुनिसुव्रतनाथ जी का विधान करायें।

प्रश्न 4. क्या मेरी कुंडली में विदेश योग है? - अरिहन्त जैन, शालीमार गार्डन, दिल्ली

उत्तर - अरिहन्त जी, बहुत जल्द आप विदेश यात्रा पर जायेंगे। मूंगा रत्न का लॉकेट मंगलवार को धारण करें।

गुरुजी से संपर्क सूत्र-
9990402062
8826755078

स्वस्थ और लंबी उम्र का मंत्र: छोटी आदतें, बड़ा असर

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में लोग लंबी उम्र और अच्छे स्वास्थ्य के लिए बड़े-बड़े उपाय ढूंढते हैं, जबकि सच्चाई यह है कि अच्छी सेहत का राज हमारे रोजमर्रा के छोटे-छोटे कामों में छिपा होता है । यदि हम अपनी दिनचर्या में कुछ सरल लेकिन प्रभावी आदतें शामिल कर लें, तो न केवल शरीर स्वस्थ रहेगा बल्कि मन भी शांत और प्रसन्न रहेगा।

रोज चलना अपनाएँ: शरीर को गतिशील रहने के लिए बनाया गया है। नियमित रूप से चलना रक्त संचार को बेहतर बनाता है, दिल को मजबूत करता है और मन को तनावमुक्त रखता है। जापान जैसे देशों में चलना सिर्फ व्यायाम नहीं, बल्कि एक औषधि माना जाता है, यही कारण है कि वहाँ वृद्धावस्था में भी लोग सक्रिय और ऊर्जावान रहते हैं।

संतुलित और सीमित आहार लें: जितनी भूख हो, उससे थोड़ा कम खाना स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है। जापानी सिद्धांत ''Hara Hachi Bu'' यानी 80% पेट भरने तक भोजन करना पाचन तंत्र को स्वस्थ रखता है, शरीर पर अनावश्यक दबाव नहीं डालता और ऊर्जा बनाए रखता है।

समय पर सोना और जागना: जल्दी सोने और जल्दी उठने की आदत शरीर की जैविक घड़ी को संतुलित करती है। सुबह का शांत वातावरण मानसिक शांति देता है और दिनभर के लिए सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करता है। अच्छी नींद शरीर की मरम्मत, हार्मोन संतुलन और मानसिक स्थिरता के लिए अत्यंत आवश्यक है।

पर्याप्त पानी पिएँ, शक्कर कम करें: अक्सर थकान का कारण भोजन की कमी नहीं, बल्कि पानी की कमी होती है। पर्याप्त पानी शरीर को डिटॉक्स करता है और हर कोशिका को सक्रिय रखता है। वहीं अधिक शक्कर धीरे-धीरे शरीर को नुकसान पहुँचाती है, इसलिए इसका सेवन सीमित रखें।

प्राकृतिक भोजन को प्राथमिकता दें: ऐसा भोजन चुनें जिसे आपकी दादी, नानी पहचान सकें। ताजा, सादा और प्राकृतिक आहार शरीर को वास्तविक पोषण देता है, जबकि प्रोसेस्ड फूड केवल स्वाद देता है, स्वास्थ्य नहीं।

सकारात्मक संगत रखें: आपका वातावरण आपके स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डालता है। तनाव, नकारात्मकता और विषैले रिश्ते शरीर को भीतर से कमजोर करते हैं। अच्छे और सकारात्मक लोगों के साथ रहने से मानसिक शांति और भावनात्मक मजबूती मिलती है।

खुलकर हँसें: हँसी सबसे सस्ती और असरदार दवा है। यह तनाव हार्मोन को कम करती है, इम्युनिटी बढ़ाती है और जीवन को हल्का बनाती है। खुश रहने वाला व्यक्ति अधिक स्वस्थ और दीर्घायु होता है।

पैरों का विशेष ध्यान रखें: हमारे पैर हमें जीवनभर सहारा देते हैं। नियमित चलना, हल्की स्ट्रेचिंग और देखभाल से पैर मजबूत रहते हैं, जिससे पूरा शरीर संतुलित और सक्रिय रहता है।

नियमित स्वास्थ्य जांच कराएँ: बीमारियों से बचाव, इलाज से आसान होता है। समय-समय पर जांच कराने से छोटी समस्याएँ समय रहते नियंत्रित हो जाती हैं और बड़ी बीमारियों से बचाव होता है।

जिज्ञासु और सक्रिय मन रखें: जो व्यक्ति सीखना नहीं छोड़ता, वह उम्र के साथ भी युवा बना रहता है। जिज्ञासु मन हमेशा सक्रिय, तेज और जीवन से भरा रहता है।

लंबी और स्वस्थ उम्र: किसी एक बड़े बदलाव से नहीं, बल्कि रोज के छोटे-छोटे सकारात्मक कदमों से बनती है। अपने शरीर का ध्यान धीरे-धीरे और निरंतर रखें, क्योंकि यही आपका जीवन भर का सच्चा साथी और एक मात्र घर है।

Dolphin Waterproofing

For Your New & Old Construction

आधुनिक टेक्नोलॉजी से छत को रखे वाटरप्रूफ, हीटप्रूफ, वेदर प्रूफ पायें, सीलन, लीकेज व गर्मी से राहत एवं बिजली के बिल मे भारी बचत करें।

छत व दीवारों का बिना तोडफोड के सीलन का निवारण

Rajendra Jain
Dr. Fixit Authorised Project Applicator
80036-14691
116/183 Agarwal Farm opp. D Mart Mansoravar Jaipur

गोधा परिवार ने श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर के छात्रों को कराया भोजन

राजाबाबू गोधा, संवाददाता (राज.)

3 मई। जयपुर शहर के स्व. श्री सुजानमल जी और कमला जी गोधा की पुण्य स्मृति में नेमीसागर जयपुर निवासी प्रसिद्ध समाजसेवी मुनिभक्त श्री अश्विनी - मधु जी गोधा परिवार की तरफ से श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर के छात्रों को 3 मई 2026 को स्वरुचि भोज कराया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों को स्नेहपूर्वक भोजन परोसा गया और सेवा भाव का प्रेरणादायी संदेश दिया गया। कार्यक्रम में संस्थान के महामंत्री सुरेश कासलीवाल ने बताया कि इस अवसर पर अश्वनी-मधु गोधा ने संस्थान के शिरोमणि संरक्षक बनने की घोषणा करते हुए उसी समय चेक भेंट कर स्वीकृति प्रदान की, इस अवसर पर शाबाश इंडिया के राकेश गोदिका, वैशाली नगर जैन समाज अध्यक्ष श्री सुमेर जी पाटोदी- ममता जी, श्री कमलेश जी-ऊषा जी गंगवाल, श्री सुशील जी-मंजू जी, श्री सुरेंद्र जी-निर्मला जी, श्रीमती सज्जन कंवर जी, अशोक जी-प्रमिला जी, अंकित जी तथा सन्मति ग्रुप के संगठन सचिव नितेश पांड्या सहित अनेक गणमान्य जन उपस्थित रहे, सभी ने इस सेवा कार्य में सहभागिता निभाकर पुण्य अर्जित किया तथा दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित की, साथ ही सेवा और संस्कारों की इस परम्परा को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया।

स्वत्वाधिकारी 'श्री भारतवर्षीय दिगबर जैन महासभा' के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक सुभाषचन्द्र गुप्ता द्वारा द इण्डियन एसप्रेस प्रा. लि. सी 26, अमौसी इण्डस्ट्रीयल एरिया लखनऊ उर प्रदेश से मुद्रित एवं श्री नंदीश्वर लोर मिल्स कपाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग लखनऊ-226004 उ. प्र. से प्रकाशित, सपादक -सुधेश कुमार जैन

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

अध्यक्ष
गजराज जैन गंगवाल
मो. 09810900009

कार्याध्यक्ष
रमेश जैन तिजारिया
मोबाइल - 08290950000
प्रकाशचन्द्र जैन बड़जात्या
मोबाइल- 9840213132
राजेश बी. शाह
मोबाइल- 9076700000

महामंत्री
पवन जैन गोधा
मो. 9311198985

कोषाध्यक्ष
प्रकाश बोहरा
दिल्ली

सम्पादक
सुधेश कुमार जैन, लखनऊ
मो. 09415108233
नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, ऐशबाग, लखनऊ- 226004 (उ0प्र0)
jaingazette2@gmail.com
dmahasabha@yahoo.com

सह सम्पादक (मानद)
राजेन्द्र जैन 'महावीर' सनावद
मो. 9407492577
डॉ. सुनील 'संचय' ललितपुर
मो. 9793821108

लखनऊ प्रधान कार्यालय प्रबंधक प्रकाशक एवं मुद्रक
सुभाषचन्द्र गुप्ता
मोबा. 09415008344

दिल्ली मुख्य कार्यालय प्रबंधक
स्वराज जैन
मोबा. 09899614433
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, 5, राजा बाजार, खण्डेलवाल जैन मंदिर कॉम्प्लेक्स, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली -1
011-23344668, 23344669,
digjainmahasabha@gmail.com
www.digjainmahasabha.org

जैन गजट की सदस्यता
वार्षिक (एक वर्ष) रू. 300
आजीवन (दस वर्ष) रू. 2100
निर्धारित रियायती साधारण डाक से कोरियर से मंगाने पर प्रतिवर्ष अतिरिक्त शुल्क- दिल्ली, उ.प्र. रू. 1000 अन्य प्रदेश रू. 1500

'जैन गजट' में विज्ञापन
देने हेतु सम्पर्क-
7607921391, 7505102419
जैन गजट में प्रकाशनार्थ लेख, फोटो, समाचार, विज्ञापन आप ईमेल
jaingazette2@gmail.com
पर भेजें

श्रमण संघ के आगमन पर दिखा सामाजिक समरसता और प्रशासनिक समन्वय का अनोखा संयोग

वात्सल्य मूर्ति आचार्य 108 श्री इन्द्रनन्दी जी महाराज का पिपलाई में हुआ ससंघ प्रवेश

दिनांक 04.05.2026, बामनवास। श्रमण तपस्वी आचार्य 108 श्री पदम नन्दी जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य वात्सल्य मूर्ति अमितभद्र श्रमण गौरव आचार्य 108 श्री इन्द्रनन्दी जी महाराज का ससंघ निवाई से श्री महावीरजी के लिए चल रहे मंगल विहार के तहत पिपलाई में मंगल प्रवेश हुआ। उनके साथ परम पूज्य श्रमण उत्कृष्ठ नन्दी जी और नाभिनन्दी जी महाराज का भी मंगल प्रवेश समुदाय को हर्षित करने वाला पल रहा।

श्रमणों के सानिध्य हुई विश्वशांति के लिए शांतिधारा: पिपलाई कस्बे में प्रवेश के पूर्व दिगम्बर जैन मन्दिर के पदाधिकारियों ने श्रमण गौरव को श्रीफल भेंट किया। पिपलाई में प्रवेश के बाद श्रमण संघ ने दिगम्बर जैन मन्दिर में भगवान के दर्शन कर ध्यान की मुद्रा में विशेष पूजा अर्चना की। इसके बाद श्रमण संघ के सानिध्य में विश्वशांति के लिए वृहत शांति धारा का आयोजन किया गया जिसके करने का सौभाग्य मन्दिर के प्रवक्ता बृजेन्द्र कुमार जैन को मिला, जिससे मन्दिर में

आध्यात्मिक ऊर्जा की लहरों की हिलोरें उठने लगीं। सभी श्रावक मंत्रमुग्ध होकर इसका लाभ उठा रहे थे।

सामाजिक समरसता और प्रशासनिक समन्वय से श्रमण संघों के हो रहे हैं मंगल विहार: एक बार फिर पिपलाई में गुर्जर समुदाय ने उदारता दिखाते हुए निरंतराय आहार चर्या संपन्न करवाने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया। आहार चर्या में ज्योति शिक्षण संस्थान स्कूल के निदेशक अखलेश गुर्जर ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आहार चर्या में श्रावक और श्राविकाओं ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। श्रमण संघ के पैदल विहार एवं उनके ठहरने, निहार और हीटवेब को देखते हुए उनके स्वास्थ्य की सुरक्षा के उपखण्ड स्तरीय प्रशासन ने महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में अपनी भूमिका का कुशल निर्वहन किया, जिसके लिए अल्पसंख्यक वर्ग ने जैन समुदाय ने उपजिला कलेक्टर और उपखण्ड स्तर के सभी पदाधिकारियों एवं गुर्जर समुदाय का आभार प्रकट किया।

महावीर जी में होगा वात्सल्य मूर्ति और गणिनी शिरोमणि अदभुत मिलन: वात्सल्य मूर्ति अमित भद्र संत गौरव श्रमण आचार्य 108 श्री इन्द्र नन्दी जी महाराज का ससंघ सिद्धान्त रत्न भारत गौरव गणिनी शिरोमणि आर्यिका 105 विशुद्धमति और पट्टगणिनी 105 विदुषमति एवं पट्टगणिनी 105 विज्ञमति माताजी का ससंघ श्रीमहावीरजी में अदभुत मिलन होगा, जो बहुत ही सुन्दर और मनोहारी दृश्य होगा।

इस अवसर पर संघपति महेन्द्र जैन चंवरिया अध्यक्ष अग्रवाल समाज चौरासी संभाग, शैलेन्द्र पाटनी, गुणमाला चंवरिया, इंद्रा चंवरिया, प्रेम जी लावा, इन्दु झिलाय, रानू जैन, रेखा जैन, दीपशिखा चंवरिया, मुन्नी भांजा, शोभा पाटनी, मंजुला कला, प्रेमा कसलीवाल, बीना बड़गांव, मुकेश जी बनेठा वाले, नवरत्न नानेर, धर्मचंद लावा, सुनील जैन, मुकेश जैन, सुमनलता जैन, राजुल जैन, वर्धमान कोचिंग सेन्टर की निदेशक एकता जैन, अभिनन्दन जैन, मेघा जैन आदि सहित बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित थे।

विहार के दौरान टला बड़ा हादसा

आचार्य अतिवीर मुनिराज व श्रावकगण सुरक्षित

ग्रेटर नोएडा क्षेत्र में विहाररत परम पूज्य आचार्य श्री 108 अतिवीर जी महाराज के मंगल विहार के दौरान एक बड़ा सड़क हादसा होते-होते टल गया। विहार के समय सामने की दिशा से तेज गति में आ रहा एक ट्रक अचानक अनियंत्रित होकर पलट गया और पूरी तरह घूमते हुए सड़क पर दुर्घटनाग्रस्त हो गया। घटना स्थल और विहार कर रहे संघ के बीच की दूरी मात्र चार कदमों की ही रह गई थी। जानकारी के अनुसार, ग्रेटर नॉएडा सेक्टर-10 से सेक्टर-16बी की ओर विहार प्रारंभ होते ही एक कुत्ता लगातार आचार्य संघ के साथ-साथ चलने लगा। कुछ दूरी पर वह कुत्ता थोड़ा पीछे रह गया, तब आचार्य श्री ने करुणावश संघ को कुछ क्षणों के लिए रुकने का संकेत दिया, ताकि वह भी पास आ सके। इसी दौरान कुछ ही क्षण बाद सामने से आ रहा ट्रक अनियंत्रित होकर पलट गया। उपस्थित लोगों का मानना है कि यदि उस समय संघ नहीं रुकता, तो पूरा संघ ट्रक की चपेट में आ सकता था और यह घटना अत्यंत भयावह रूप ले सकती थी। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, स्थिति कुछ क्षणों के लिए बेहद डरावनी हो गई थी और वहां उपस्थित लोगों में अफ़रा-तफ़री का माहौल बन गया। सौभाग्यवश आचार्य संघ व सभी साधर्मी पूर्णतः सुरक्षित हैं। हालांकि इस दुर्घटना में एक श्रावक को कुछ चोटें आई हैं, जिन्हें प्राथमिक उपचार दिया गया। घटना के बाद उपस्थित श्रद्धालुओं ने राहत की सांस ली और सभी ने इसे गुरुदेव के पुण्य प्रभाव एवं ईश्वर की कृपा बताया। सामाजिक जनों ने यह भी चिंता व्यक्त की कि देशभर में समय-समय पर जैन संतों के विरुद्ध विभिन्न प्रकार की दुर्भावनापूर्ण घटनाएं सामने आती रही हैं। ऐसे में इस घटना को भी किसी संभावित साजिश की आशंका से पूरी तरह नकारा नहीं जा सकता। समाज के वरिष्ठजनों ने सभी श्रावकों से अपील की है कि विहार के दौरान अधिक से अधिक संख्या में संतों के साथ चलें तथा अत्यंत सावधानी, सतर्कता एवं अनुशासन के साथ अपनी जिम्मेदारी निभाएं, ताकि भविष्य में किसी भी अप्रिय घटना से बचा जा सके।

विशुद्ध सागर जी द्वारा केशलोंच संपन्न

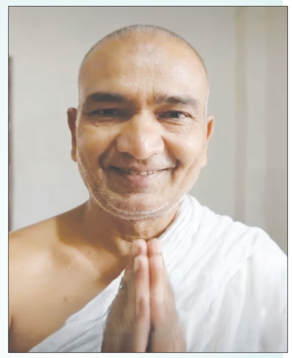

धन्य है वह आत्मशक्ति जिसने संसार की नश्वरता को पहचान कर संयम का मार्ग चुना है। बड़ौत गौरव दिगंबर जैन इंटर कॉलेज के पूर्व प्रधानाचार्य श्री वकील चंद जी जैन की केशलोंच की क्रिया पट्टाचार्य श्री 108 विशुद्ध सागर मुनिराज जी के द्वारा संपन्न कराई गई है। यह उनकी आध्यात्मिक दृढ़ता को दर्शाती है। शिक्षा के क्षेत्र में अंधकार मिटाने के पश्चात स्वयं के अभ्यंतर के विकारों को मिटाने के मार्ग पर अग्रसर है। प्रथम बार इस कठिन साधना को वीरता पूर्वक करने पर उनकी धर्म निष्ठा को शत-शत नमन और बारंबार अनुमोदना। यह क्षण पूरे समाज के लिए गौरवशाली है क्योंकि एक विद्वान जब धर्म क्रिया के मार्ग पर आगे बढ़ता है पूरे समाज के लिए प्रेरणा बन जाता है। दिगंबर जैन आगम के अनुसार केशलोंच की क्रिया अपरिग्रह और अहिंसा के उत्तम आदर्श को दर्शाती है, जब कोई श्रावक या मुनि अपने हाथों से अपने केश का उन्मूलन करते हैं तो वह संसार को यह संदेश देते हैं कि अब उन्हें अपने शरीर के प्रति रंच मात्र भी मोह नहीं। उनकी दृढ़ता और कठिन साधना को हम कोटि कोटि नमन करते हैं।आपके पुण्य की बहुत बहुत अनुमोदना।

पंजीकृत समाचार पत्र
R.N.I. NO. 59665/92
Posted at R. M. S, Char bagh, Lko. on Every Monday, wednesday and thursday
डाक पंजीयन संख्या : SSP/LW/NP/115/2024-2026

If Undelivered Please Return To : Publisher- Jain Gazette C/o Sri Nandishwar Flour Mills Compound, Mill Road, Aish bagh, Lucknow - 226004 (U. P.) (INDIA) Mob. 9415108233, 7505102419, 7607921391 Web site- jaingaztte.com email- jaingazette2@gmail.com whatsapp 7607921391

To,
....
....
....

एक प्रति का मूल्य 3/- रुपये (कार्यालय से लेने पर)

वार्षिक सदस्यता शुल्क 300/-, दस वर्षीय आजीवन शुल्क 2100/-
(डाक/कोरियर से मंगाने पर खर्च अतिरिक्त देय होगा)

जैन गजट संबंधी सभी विवादों के लिए न्याय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा। लेखक के विचारों से संस्था या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।